SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 06 • AUGUST 2022

हिन्दी मासिक

अगस्त 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

जंगे आज़ादी

हक़ीक़त में यह जंगे आज़ादी अवामी और क़ौमी थी, हिन्दू और मुसलमान सब उसमें शरीक थे, वतन दोस्ती, एकता और वलवले का ऐसा मन्ज़र कभी न देखा गया था। जैसा कि उस वक़्त देखने में आया, फिर भी क़यादत व रहनुमाई के मैदान में मुसलमानों का पल्ला भारी था।

(मौलाना अली मियाँ नदवी रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि
एक प्रति ₹ 30/-
वार्षिक ₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

अगस्त 2022 वर्ष 21 अंक 06

एकता और विश्वास का माहौल पैदा करने की ज़रूरत

जहाँ तक मुल्क की आबादी की जान व माल, और इज़्ज़त व आबरू के तहफ़्फ़ुज़ व सुरक्षा का सवाल है, यह हर हुकूमत का सबसे सर्वोच्य कर्तव्य है और इसके बगैर वह शासन या प्रशासन कहलाने का हकदार नहीं, एक बड़ी आबादी वाले देश में जिसमें विभिन्न धर्म, संस्कृतियाँ और जातियाँ रहती और बसती हैं सबसे ख़तरनाक़ चीज़ हिंसा का रुजहान है जो व्यक्ति और बिरादरियों से आगे बढ़ कर साम्प्रदायिक दंगों की शक्ल इख़्तियार कर लेता है और जिसके नतीजे में हजारों बेगुनाहों का क़त्ले आम होता है और मुल्क के विभिन्न हिस्से सम्मान, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने की कोशिशों और आपसी एकता में आगे बढ़ने के बजाय मैदाने जंग बन जाते हैं।

(हजरत मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
मानव इतिहास का अनमोल मोती	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	10
स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज	मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0	12
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	17
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	19
क्रोध	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0	21
स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	23
हज और कुर्बानी का पैग़ाम	जमाल अहमद नदवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	27
गाँधी जी का सपना	इं0 जावेद इक़बाल	29
हमारा देश (पद्य)	मुबीन फ़तेहपुरी	31
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	32
अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0	मौलाना हक़ीम अब्दुल हई हसनी रह0	35
स्वतंत्रता संग्राम और मुसलमान	इदारा	37
बादशाह की बहादुरी	अफज़ल हुसैन	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद–

वे पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ रह जाने पर खुश हैं और उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई तो वे समझते ही नहीं[1](87) हाँ रसूल ने और उनके साथ ईमान वालों ने अपने मालों और जानों के साथ जिहाद किया, भलाईयाँ उन्हीं लोगों के लिए हैं और यही लोग सफल होने वाले हैं(88) उनके लिए अल्लाह ने ऐसी जन्नतें तैयार कर रखीं हैं जिनके नीचे से नहरें जारी हैं उसी में वे हमेशा रहेंगे यही बड़ी सफलता है [2](89) और देहातों से बहाना करने वाले लोग आए कि उनको अनुमति मिल जाए और जो अल्लाह और उसके पैग़म्बर से झूठ बोल चुके थे वे बैठ रहे, जल्द ही उनमें इनकार करने वाले दुखद अज़ाब से ग्रस्त होंगे [3](90) कमज़ोरों पर और रोगियों पर और उन लोगों पर जो ख़र्च करने का सामान नहीं पाते कोई हरज नहीं जब वे अल्लाह और उसके पैग़म्बर के साथ निष्ठा रखें, अच्छे काम करने वालों पर कोई पाप नहीं और अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है[4](91) और न उन पर कोई आरोप है कि जब वे आपके पास आये ताकि आप उनको सवारी दे दें, आपने कहा कि मेरे पास तो कुछ नहीं कि मैं उन पर तुम्हें सवार कर दूँ (तो) वे इस हाल में वापस फिरे कि उनकी आँखों से आँसू जारी थे इस दुःख में कि उनको कुछ उपलब्ध नहीं कि जो वे खर्च करें(92) आरोप तो उन लोगों पर है जो धनी हो कर आपसे छुट्टी चाहते हैं और इस पर खुश हैं कि पीछे रह जाने वालियों के साथ रह जाएं और अल्लाह ने उनके दिलों पर मोहर लगा दी तो वे जानते नहीं(93) जब तुम लोग उनके पास वापस होगे तो वे तुम्हारे सामने आ कर बहाने करेंगे, कह दीजिए कि बहाने मत बनाओ हम तुम्हारी बात हरगिज़ नहीं मानेंगे, अल्लाह ने तुम्हारी सारी ख़बरें हमें बता दी हैं और अभी अल्लाह और उसके रसूल पैग़म्बर तुम्हारा काम देखेंगे फिर तुम छिपे और खुले के जानने वाले के पास लौटाए जाओगे फिर जो कुछ भी तुम करते रहे थे वह सब तुम्हें बता देगा(94) जब तुम उनके पास वापस होगे तो वे जल्द ही तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएंगे ताकि तुम उनको उनके हाल पर छोड़ दो, तो तुम उनको उसी हाल ही में छोड़ दो, बेशक वे गंदे लोग हैं और उनका ठिकाना दोज़ख़ है बदला उनकी करतूतों का(95) वे तुमसे क़समें खाते हैं ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ बस अगर तुम राज़ी हो भी जाते हो तो अल्लाह तो अवज्ञाकारी लोगों से राज़ी नहीं होता [5](96) गंवार कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत सख़्त हैं और इसी लायक़ हैं कि अल्लाह ने जो सीमाएं अपने रसूल पर उतारी हैं उन्हें

न सीखें और अल्लाह खूब जानता हिकमत रखता है(97) और कुछ गंवार ऐसे हैं जो अपने ख़र्च को टैक्स क़रार देते हैं और तुम पर बुरे दिन की प्रतीक्षा करते हैं, बुरे दिन उन्हीं पर आएं और अल्लाह खूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है(98) और देहात के रहने वाले कुछ वे हैं जो अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते हैं और जो ख़र्च करते हैं उसको अल्लाह के पास निकटता और पैग़म्बर से दुआएं (लेने) का साधन बनाते हैं, सुन लो बेशक यह उनके निकटता ही का साधन है, अल्लाह जल्द ही उनको अपनी रहमत में प्रवेश करा देगा बेशक अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु है[6](99)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. पवित्र कुर्आन की सूरह में जब चेताया जाता है कि पूरे खुलूस (निष्ठा) व दृढ़ता से ईमान लाओ और अल्लाह के पैग़म्बर के साथ जेहाद करो तो मुनाफ़िक़ों की हक़ीक़त खुलने लगती है, उनमें धनी भी जी चुराते हैं और चाहते हैं कि घर में रहने वाली औरतों की तरह घरों में घुस कर बैठे रहें, उनके इसी झूठ व निफ़ाक़ (कपट) की वजह से उनके दिलों पर मोहर लगा दी गई है, कोई भली बात उनमें दाखिल ही नहीं होती।

2. मुनाफ़िक़ों के विपरीत यह मुख़्लिस (निष्ठावान) ईमान वालों की वफ़ादारी और त्याग व बलिदान और उस पर अल्लाह के वादों का बयान है।

3. देहातों के लोग इजाज़त के लिए आते ऐसा लगता है उनमें दोनों तरह के लोग थे, वे लोग भी थे जो वास्तव में असमर्थ थे और वे भी थे जो वध करने आए थे और उनके दिल ईमान से खाली थे, उन्हीं के बारे में आगे कठोर अज़ाब की वईद (धमकी) है।

4. जो लोग वास्तव में असमर्थ हैं उनकी ओर से सफ़ाई दी जा रही है कि उन पर कोई आरोप नहीं फिर आगे उन्हीं असमर्थों में प्रशंसा के तौर पर उन लोगों का उल्लेख है जिन के पास साधन नहीं थे वे अपने शामिल न होने पर रोते हुए वापस हुए, उन्हीं के बारे में आपने रास्ते में फरमाया था कि वे तुम्हारे साथ हर जगह शरीक़ हैं, अपनी असमर्थता की वजह से वे न आ सके, उसके बाद फिर मुनाफिकों की भर्त्सना का सिलसिला शुरु हो रहा है।

5. जब निफ़ाक़ खुल गया तो उपेक्षा तो ठीक है लेकिन दोस्ती और प्रेम जायज़ नहीं, ऐसे लोगों से दूर रहना ही बेहतर है।

6. यह देहात के रहने वालों का वर्णन है उनमें भी हर वर्ग के लोग थे मुख़्लिस (निष्ठावान), ईमान वाले भी, काफ़िर भी और मुनाफिक़ भी, हाँ हिदायत (संमार्ग) के केन्द्र से दूर रहने और दिलों की कठोरता की वजह से उनमें कुफ़्र और निफ़ाक़ की भी कठोरता थी इसीलिए ''अल् अअ्राबु अशद्दु कुफ़रौं व निफ़ाक़ा'' कहा गया।

❖❖❖

मुहर्रमुल हराम

इस्लामी कैलेण्डर का पहला महीना है, नया इस्लामी साल 1444 हिजरी मुबारक हो।

इदारा

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

बद्र और हुदैबिया में शामिल होने वालों की श्रेष्ठताः—

हज़रत हफ़्सा रज़ि0 अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मैं पूरी उम्मीद करता हूँ कि जो भी बद्र और हुदैबिया में शरीक थे अगर अल्लाह ने चाहा तो जहन्नम में नहीं जाएंगे। मैंने कहा, ऐ अल्लाह के रसूल! क्या अल्लाह ने यह नहीं फरमाया है कि ''व इम् मिंकुम इल्ला वारिदुहा'' और तुम से कोई भी ऐसा नहीं जिसका गुज़र उस (जहन्नम) तक न हुआ हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया क्या तुम ने नहीं सुना है? अल्लाह फरमाता है ''सुम्म नुनज्जिल्लज़ी न इत्तक़ो'' (फिर उन्हें हम नजात दे देंगे जो अल्लाह से डरते थे)।

(इब्ने माजा)

हज़रत जाबिर रज़ि0 फरमाते हैं कि हम सुलह हुदैबिया के समय चौदह सौ थे, (तो हमको सम्बोधित करते हुए) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया आज धरती पर तुम लोग सब से बेहतर हो। (बुखारी व मुस्लिम)

अंसार से मुहब्बत ईमान की निशानी और हसद छल कपट की पहचानः—

हज़रत बराअः बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अन्सार के बारे में फरमाया कि उनसे मुहब्बत करने वाला ईमान वाला होगा और जलन रखने वाला मुनाफिक़ (दो मुँहा, कपटाचारी) होगा, जो उनसे मुहब्बत करेगा, अल्लाह उससे मुहब्बत करेगा, और जो उनसे बुग्ज़ रखेगा अल्लाह उससे बुग्ज रखेगा।

(बुख़ारी)

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 की श्रेष्ठताः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया (खुदा के सिवा) अगर मैं किसी को खलील (दोस्त) बनाता तो अबू बक्र को बनाता लेकिन वे मेरे भाई और साथी हैं।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की विशिष्टताः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तुम से पहले की उम्मतों में कुछ लोग इल्हाम (ईश्वरीय संकेत) वाले हुए थे, मेरी उम्मत में अगर कोई ऐसा है तो वो बेशक उमर हैं।

(बुखारी)

हज़रत उस्मान रज़ि0 की हया और शर्मः—

हज़रत आइशा रज़ि0 अन्हा फरमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत उस्मान रज़ि0 के बारे में फरमाया कि मैं उस शख्स से क्यों हया व शर्म न करूँ जिससे फरिश्ते हया करते हैं।

(मुस्लिम)

इसी हया का नतीजा है कि हज़रत उस्मान रज़ि0 ने इस्लाम लाने से पहले कोई ऐसा काम न किया जो नापसन्द समझा जाता हो यहाँ तक कि आपकी नज़रबन्दी के ज़माने में भी, जो कि कई दिनों तक चलती रही, कोई सख़्त बात जुबान से न निकाली।

हज़रत अब्बास रज़ि0 की बरकत से वर्षा का होनाः—

हज़रत अनस रज़ि0 बयान करते हैं कि जब लोग क़हत (अकाल) में पड़ जाते तो हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि0 के वसीले से वर्षा की दुआ मांगते और कहते, ऐ अल्लाह हम तेरे दरबार में अपने नबी सल्ल0 का वसीला अपनाते थे और तू वर्षा कर देता था, हम अपने नबी सल्ल0 के चचा का वसीला देते हैं तू वर्षा करा दे, अतः वर्षा हो जाती थी।

(बुखारी)

हज़रत जुबैर बिन अल अव्वाम रज़ि0 की अलग पहचानः—

हज़रत जाबिर रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया कि हर नबी के खास मददगार (सहयोगी) होते हैं, मेरे सहयोगी जुबैर हैं। (बुख़ारी)

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह की कुर्बानीः—

हज़रत कैस बिन हाज़िम रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि उहद की लड़ाई के दिन मैंने हज़रत तलहा का हाथ शल (तीरों और तलवारों के ज़ख्म से छलनी) देखा, उस हाथ से उन्होंने अल्लाह के नबी सल्ल0 की रक्षा की थी।

(बुख़ारी)

हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ि0 की श्रेष्ठताः—

हज़रत अली रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नहीं सुना कि आप सल्ल0 ने किसी के लिए अपने माँ—बाप दोनों को एक साथ जमा फरमाया हो अलावा सअद बिन अबी वक्कास रज़ि0 के, उहद की लड़ाई के दिन मैंने सुना— आप सल्ल0 फरमा रहे थे ''सअद तीर चलाओ, मेरे माँ—बाप तुम पर कुर्बान हों''।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

आप सल्ल0 के इस वाक्य से सअद रज़ि0 की श्रेष्ठता का पता चलता है।

हज़रत अबू उबैदा बिन अल—जर्राह रज़ि0 की श्रेष्ठताः—

हज़रत अनस रज़ियल्लहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हर उम्मत का एक खास अमीन (अमानतदार आदमी) होता है, इस उम्मत के अमीन अबू उबैदा हैं। (बुखारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रिज़0 के लिए नबी सल्ल0 कि दुआः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा बयान करते हैं कि मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सीने से लगाया और दुआ दी, ''ऐ अल्लाह इसको हिक्मत (ज्ञान, युक्ति, शिष्टाचार) सिखा दे''।

(बुखारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 की श्रेष्ठताः—

हज़रत हफसा रज़ि0 फरमाती हैं कि अल्लाह के नबी सल्ल0 ने फरमाया अब्दुल्लाह नेक—सालेह (सौभाग्यशाली) आदमी हैं। (बुखारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 की नबी सल्ल0 से एकरूपताः–

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन यज़ीद रज़ि0 बयान करते हैं कि हमने हज़रत हुज़ैफा रज़ि0 से एक ऐसे आदमी के बारे में पूछा जो चाल–ढाल और चेहरे –मोहरे में अल्लाह के रसूल सल्ल0 से बहुत करीब हो, ताकि उससे हम यह चीज़ हासिल करें, (और उसका अनुसरण करें) उन्होंने फरमाया मैं उम्मे मअबद के बेटे (हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद) से बढ़ कर किसी को चेहरे–मोहरे और चाल ढाल में अल्लाह के रसूल सल्ल0 से ज़्यादा करीब नहीं पाता। (बुखारी)

हज़रत सअद बिन मआज़ अंसारी रज़ि0 के निधन पर अर्शे इलाही का हिलनाः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना कि सअद बिन मआज़ रज़ि0 की मौत पर अर्शे इलाही हिल गया। (बुखारी)

कुर्आन वाले चार सहाबाः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को फरमाते हुए सुना हैः इन चार लोगों से कुर्आन सीखो–

1. अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0
2. सालिम, मौला अबी हुज़ैफ़ा रज़ि0
3. उबै बिन कअब रज़ि0।
4. मुआज़ बिन जबल रज़ि0

(बुखारी)

मौला– आज़ाद किए हुए गुलाम को कहते हैं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि0 को ज़िन्दगी में ही जन्नत की खुशखबरीः–

हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ि0 बयान करते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को किसी के बारे में जो धरती पर चल–फिर रहा हो, कहते नहीं सुना कि ये जन्नत वालों में से हैं अलावा अब्दुल्लाह बिन सलाम के।

(बुखारी)

अल्लाह के महबूब रसूल सल्ल0 के महबूब सहाबीः–

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि0 फरमाती हैं कि क़बीला बनू मख़ज़ूम की एक औरत की घटना ने कुरैश को चिंतित कर दिया, उन्होंने कहा– इस मामले में (सिफारिश की) कौन हिम्मत कर सकता है, सिवा अल्लाह के रसूल सल्ल0 के महबूब उसामा बिन ज़ैद रज़ि0 के (कि यह वही कर सकते हैं) (बुखारी)

इससे उसामा रज़ि0 की महबूबियत और प्रियता साबित हो रही है।

हज़रत जअफर रज़ि0 बिन अबू तालिब की तारीफः–

हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ि0 फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने जअफर रज़ि0 से फरमाया कि आचार–व्यवहार और चेहरे मोहरे में तुम मेरे जैसे हो। (तिर्मिज़ी) ◆◆

शहादत

शहादत से मानव ये मरता नहीं है।
है जीवित मगर हम को दिखता नहीं है।।
उसे मिल चुका है हमेशा का जीवन।
हर इक को ये सम्मान मिलता नहीं है।।

❖❖❖

सम्पादकीय

मानव इतिहास का अनमोल मोती

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इन्सान अल्लाह की सर्वश्रेष्ट सृष्टि है जिसके जीवन यापन के लिए अल्लाह ने एक विशाल दुनिया बनाई, और उसको तरह तहर की नेमतों से भर दिया, यह ऊँचे–ऊँचे पहाड़ चौड़े चकले समुद्र, यह सूर्य चन्द्रमा, ठण्डी और गर्म हवाएं यह सारा प्रबन्ध इसलिए है कि ज़मीन से ग़ल्ला और फल फूल उगे और सरलता पूर्वक इन्सान अपनी जीविका प्राप्त कर सके, इन सारी नेमतों के साथ अल्लाह ने इन्सानों के पथ प्रदर्शन और मार्ग दर्शन के लिए हर काल में अपने नबियों और रसूलों को भेजा यह रसूल अपने ज़माने के आदर्श होते थे, इन सारे नबियों का सन्देश एक ही है वह यह कि इस संसार का बनाने वाला और उसका पालनहार केवल एक ही है वही इबादत और उपासना के लायक़ है, उसका कोई साझीदार नहीं, इन नबियों और रसूलों की संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है, अल्लाह के अन्तिम नबी और रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, जिनके बाद कोई नबी नहीं आने वाला, आप रहती दुनिया तक के लिए समस्त इन्सानों के नबी हैं, ''इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम जमीआ'' ऐ नबी (मुहम्मद) कहो, ''ऐ इन्सानों, मैं तुम सबकी ओर उस अल्लाह का पैगम्बर हूं जो ज़मीन और आसमानों की बादशाही का मालिक है, उसके सिवा कोई ईश्वर नहीं है,''।

(सूरः अल–आराफ़ आयात नं0 158)

पिछले नबी इलाक़ों और कौमों के साथ विशेष थे, परन्तु हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को अल्लाह तआला ने विश्वव्यापी नबी बनाया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम द्वारा मानव सुधार के संबंध से विश्वव्यापी क्रान्ति आई, कहने वाले ने बहुत उचित कहाः–

बहार अब जो दुनिया में आई हुई है
यह सब पौध उन्हीं की लगाई हुई है।।

दुनिया के किसी भी धार्मिक पेशवा और नायक के जीवन चरित्र पर उतना नहीं लिखा गया जितना अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा और रसूल हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर लिखा गया, हज़ारों पेज नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्रशंसा में हैं, इस्लाम धर्म जिसको अल्लाह ने मानव जाति के लिए पसन्द फरमाया वह अल्लाह व रसूल के आदेशों और आज्ञा पालन पर निर्भर है, इस्लामी जीवन प्रणाली को अपनाने के लिए ''कलिम–ए–तय्यिबा'' का ज़बान से कहना और दिल से स्वीकार करना ज़रूरी है, कलिम–ए–तय्यिबा दो भागों पर आधारित है, अल्लाह को एक जानना और मानना, वही इबादत और उपासना योग्य है, उसका कोई शरीक और साझीदार नहीं,

और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के अन्तिम रसूल और नबी हैं, आप पर दीन व शरीअत मुकम्मल हो गई, आप सल्ल0 की इत्तिबा और अनुसरण में दुनिया व आख़िरत, लोक व प्रलोक की सफलता निर्भर है, अल्लाह तआला ने अपनी महब्बत को नबी करीम सल्ल0 की पैरवी के साथ सम्बन्धित कर दिया है, ''आप कह दीजिए अगर तुम महब्बत रखते हो अल्लाह से तो मेरी राह चलो ताकि महब्बत करे तुम से अल्लाह''।

(सूरः आले इमरान–31)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पूरी इन्सानियत पर सबसे पहला हक़ यह है कि आप सल्ल0 पर ईमान लाया जाए और आप सल्ल0 को अल्लाह का नबी व रसूल दिलो जान से स्वीकार किया जाए, और ज़बान से इसका इक़रार भी हो, एक मुसलमान उसी वक़्त मुसलमान हो सकता है जब वह अल्लाह के साथ अल्लाह के नबी सल्ल0 पर भी ईमान लाए, कुर्आन शरीफ़ में जगह–जगह इसका हुक्म हैः– ''ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल सल्ल0 पर''।

(सूरः तग़ाबुन आयत नं0 8)

सूरः आराफ़ में अल्लाह तआला ने फ़रमाया ''अल्लाह को मानो और उसके भेजे हुए नबी उम्मी को मानो जो अल्लाह पर और उसकी बतों पर यक़ीन रखता है, उस नबी की पैरवी करो ताकि तुम सीधे रास्ते पर आ जाओ''।

(आयत नं0 158)

यह बात खुल कर बता दी गई कि अल्लाह के साथ उसके नबी पर भी ईमान लाना ज़रूरी है इसके बिना इस्लाम विश्वास पात्र नहीं, फरमायाः–

''और जो भी अल्लाह और उसके रसूल को न मानेगा तो निःसंदेह हमने इनकार करने वालों के लिए दहकती आग तैयार कर रखी है''। अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को सम्बोधित करते हुए फरमायाः– ''और हमने आपको तमाम जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है''।

(सूरः अम्बिया– आयत नं0 107)

स्वयं नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया ''नबी अपनी क़ौम की तरफ़ भेजा जाता था और मुझे तमाम लोगों के लिए भेजा गया'' (सही बुख़ारी) हज़रत मुहममद सल्ल0 तमाम नबियों के सरदार हैं, आप पर दीन शरीअत मुकम्मल हुई, आपका आदर सम्मान करना, आपके आदेशों का पलान करना और आपसे मुहब्बत करना ईमान वालों के लिए अनिवार्य है, महब्बत करने की बात तो यहां तक कही गई है कि आदमी का ईमान उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होगा जब तक कि रसूलुल्लाह सल्ल0 से महब्बत अपने माँ–बाप, अपनी औलाद से भी ज़ियादा न हो, यानी माँ–बाप से ज़ियादा महब्बत अल्लाह के रसूल सल्ल0 से होनी चाहिए, इरशाद नबवी सल्ल0 हैः–

''तुममें से किसी का ईमान उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं होगा जब तक मैं उसके नज़दीक उसके वालिद से, उसकी औलाद से और तमाम

शेष पृष्ठ..16...पर

स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज की दशा

मौलाना सै0 अबुल हसन अली नदवी रह0

किसी भी देश और क़ौम के इतिहास में समाज की भूमिका प्रमुख होती है साहित्य और दर्शन, नृत्य या संगीत, भाषा और संस्कृति सभी कुछ दूसरे स्तर की चीज़ें हैं। यदि किसी क्षेत्र में सभ्य और स्वस्थ समाज का अभाव होगा तो कोई भी हुकूमत, कोई भी गुरुकुल, कोई भी धर्म या दर्शन वहां के निवासियों को सुख और शान्ति से ज़िन्दगी गुज़ारने में मदद नहीं दे सकेगा। वह समाज जो भले और बुरे की पहचान रखता हो, न्याय और अन्याय के अन्तर की उस में समझ हो, अपना हित और अहित करने वालों की परख हो, किसी भी देश के लिए बड़ी सम्पत्ति है। ऐसे समाज में रहने वाला इंसान यदि बुराई, अन्याय और अत्याचार को रोकने में समर्थ नहीं होता फिर भी यह क्या कम उपलब्धि है कि वह उन का साथ नहीं देता, समर्थन नहीं करता और मन ही मन रोता रहता है सभ्य समाज की कमी को कोई भी वस्तु पूरा नहीं कर सकती है। क्योंकि समाज ही हुकूमत देता है, समाज ही प्रशासन देता है। जब समाज दूषित हो जाता है तब अकुशल और भ्रष्ट लोग हर क्षेत्र में प्रभावी हो जाते हैं और नतीजे में वह देश अपनी साख खो बैठता है और जनता विभिन्न कष्ट झेलने पर मजबूर हो जाती है। दूषित समाज में जब लोग भले बुरे की पहचान खो बैठते हैं, न्याय अन्याय का अन्तर मिट जाता है जंगल का क़ानून चलने लगता है जो भी ऊँची कुर्सी पर बैठ गया उसके सामने सर झुका दिया, उसके गुण गाने लगे और चढ़ते सूरज के पुजारी बन गए तब स्थिति बहुत गम्भीर होती है और यह चिन्ता का विषय होता है। सभ्य समाज में यदि कभी अकुशल और भ्रष्ट लोग शासन–प्रशासन पर क़ब्ज़ा जमाने में सफल होते हैं तो उन का क़ब्ज़ा अधिक समय तक जारी नहीं रहता और शीघ्र ही उसमें परिवर्तन आ जाता है। भारत की आज़ादी के बाद सभ्य और स्वस्थ समाज का निर्माण देश की पहली ज़रूरत थी जिस पर ध्यान नहीं दिया गया। नैतिक शिक्षा का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर दिया गया। यदि राष्ट्र रूपी नैतिक मूल्यों का उपहार देने का प्रयत्न करते तो उस समाज में कोई जुल्म व अन्याय से हाथ न मिलाता, उसमें हक़ बात कहने का साहस होता और अत्याचार का हाथ पकड़ने की हिम्मत होती। इसके लिए ईश्वर का विश्वास और खुदा का ख़ौफ़ ज़रूरी होता है इस्लाम की शिक्षा जिस से यह देश भली भांति परिचित था, इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक सिद्ध हो सकती थी। देश का हित चाहने वाले प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है कि वह देश की मूल समस्याओं का जायज़ा ले, वह समस्यायें जिन्होंने हमारे समाज को दीमक की तरह चाट कर अन्दर से खोखला कर दिया है और अनेक क्षेत्रों में भौतिक तरक्की के होते हुए भी आम लोगों तक उनका लाभ नहीं पहुंच सका है। सबसे पहली ख़राबी जो हमारे देश में बहुत तेज़ी से फैली है वह है इंसानी जान के महत्व और उसके मूल्य को न पहचानना। किसी भी समाज के लिए यह सबसे

भयानक खतरा कहा जा सकता है। इंसान की जान का महत्व हीन हो जाना किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति के लिए ही नहीं बल्कि इंसानियत के लिए मौत का पैग़ाम होता है। जब किसी देश में भाई भाई के खून का प्यासा हो जाता है तब उस देश की विशाल जनसंख्या, उपज और खनिज के बड़े बड़े भण्डार, उच्च कोटि की शिक्षा और तकनीक कोई चीज़ लाभप्रद सिद्ध नहीं होती यह बहुत आश्चर्य की बात है कि वह देश जिसने प्राचीन काल में प्रेम की वंशी बजाई थी, संस्कृत फ़ारसी और फिर हिन्दी उर्दू में महब्बत के गीत गाए थे, सूफ़ी और सन्तों ने इंसानियत के आदर और सम्मान का पाठ पढ़ाया था और अन्त में गांधी जी ने सत्य और अहिंसा का सन्देश पूरी दुन्या को सुनाया था आज उसी देश में इंसानी जान की कोई क़ीमत नहीं है। दूसरी ख़राबी संकीर्णता और साम्प्रदायिकता की है जो भाषा संस्कृति और सभ्यता के मार्ग से होते हुए अब क्षेत्रीयता तक पहुंच चुकी है। इसी बीमारी ने हमारे देश को प्राचीन काल में टुकड़े टुकडे कर दिया था और विदेशी शक्तियों को आमंत्रित करने में विशेष भूमिका निभाई थी। यह बीमारी आज फिर जोर पकड़ रही है। यदि इसे क़ाबू में न किया गया तो एक बार फिर नफ़रत का उन्माद बोतल के जिन्न की तरह बाहर आ सकता है। भारत के विभिन्न प्रदेशों में और फिर प्रदेशों के विभिन्न अंचलों में एक दूसरे के प्रति द्वेष और विद्रोह की भावना पाई जाती है। यहां विभिन्न जातियों और उपजातियों के बीच भी भेद भाव और घृणा की दीवारें खड़ी हैं। एक जाति दूसरी जाति के प्रति अन्याय और अत्याचार किये जाने में संकोच नहीं करती बल्कि इसको अपनी जाति की सेवा समझते हुए शुभ कार्य मानती हैं किसी विभाग में कोई विशेष जाति का अधिकारी पहुंच जाने पर उस का प्रयास होता है कि अपनी ही बिरादरी के लोगों को सेवा के अवसर दिये जायं और उन्हें विशेष लाभ पहुंचाये जायें, चाहे उनमें कुशलता हो या न हो। हमारे समाज का यह रोग उसे दीमक की तरह चाट रहा है और सम्पूर्ण प्रशासन इस बीमारी के कारण खोखला और कमज़ोर हो गया है। तीसरी बड़ी ख़राबी जो हमारे देश में बड़ी तेज़ी से फैली है और राष्ट्र निर्माण के कार्य में पहाड़ जैसी बाधा बन कर खड़ी हो गई है, अति शीघ्र धनवान बनने की इच्छा है। धन दौलत पैदा करने का भूत देश के बच्चे–बच्चे पर सवार हो गया है। धन दौलत कमाना और उसके लिए प्रयास करना बुरा नहीं है मगर परिश्रम करके एक एक सीढ़ी चढ़ते हुए यदि धन कमाया जाय तो वह अपने ही नहीं बल्कि राष्ट्र के हित में कल्याणकारी होगा। मगर एक ही रात में धनवान बन जाने की इच्छा हर योजना को असफल कर देती है, हर निर्माण कार्य को कमज़ोर कर देती है। यह वह बीमारी है जो कैंसर की तरह हर व्यक्ति को चिपट गई है इस के कारण प्रत्येक व्यक्ति बड़े सा बड़ा खतरा ले कर अपने घर परिवार के सुख के लिए आम जनता को नुकसान पहुंचाने वाले कार्य करता है।, अपने अधिकारों का दुरुपयोग करता है छोटे से छोटा काम ईमानदारी से करना असम्भव होता जा रहा है। हर काम की कीमत चुकानी होती है, इसे रिश्वत का नाम दिया जाय या ''सुविधा शुल्क'' कहा जाए। शब्दों के हेर फेर से कोई अन्तर

नहीं पड़ता। हर व्यक्ति दूसरे की मजबूरी से लाभ उठा रहा है। इंसानी हमदर्दी, मानव प्रेम और देश भक्ति केवल कोरे शब्द हैं इन भावनाओं का अनुभव अब कहीं नहीं होता। धन बटोरने का यह पागलपन देख कर ऐसा लगता है कि इस देश में सभी नैतिक मूल्यों का पतन हो चुका है। आपसी घृणा और धन कमाने की प्रतियोगिता ही शेष बची है। घृणा का निशाना कभी कोई ज़ात–बिरादरी बनती है, कभी कोई भाषा बनती है और कभी कोई राजनैतिक पार्टी बनती है। हर हाल में इंसानियत का खून होता है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि इस्लाम की शिक्षा समाज की हर बुराई को दूर करने की ताक़त रखती है। अब हम उपरोक्त तीनों ख़राबियों के विषय में कुरआन का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। सबसे पहली खराबी इंसानी जान का मूल्यहीन हो जाना है जिसके नतीजे में नफरत जन्म लेती है और हत्या आम होती है अल्लाह कुरआन में इस विषय पर ऐलान फरमाता है ''जो व्यक्ति किसी की अनर्थ में हत्या करेगा बिना इस कारण कि हत्या का बदला लिया जाए या देश में आतंक फैलाने के मकसद से किसी को सज़ा दी जाय तो उसने मानो तमाम लोगों की हत्या की, और जो उसके जीवन का कारण बना तो जैसे तमाम लोगों के जीवन का कारण बना।''

निष्कर्ष यह कि एक इन्सानी जान इतनी क़ीमती है कि उसकी तुलना तमाम इंसानों की ज़िन्दगी से की गई है हज़रत मुहम्मद साहब का भी यही उपदेश है इंसान इतना बहुमूल्य है कि खुदा की मख़लूक़ को खुदा का परिवार कहा गया है। दूसरी ख़राबी साम्पद्रायिक नफ़रत की है जो धार्मिक, जात–पात और क्षेत्रीय आधार पर इंसानों के बीच भेद भाव और तनाव पैदा कर रही है। जब कि मानवता के एकत्व का सिद्धान्त इस्लाम का प्रमुख सिद्धान्त है। कुरआन में जगह जगह स्पष्ट किया गया है कि इंसानों का पैदा करने वाला एक ही है और इंसानियत का पिता भी एक है, सब इंसान एक ही मां बाप की सन्तान हैं, ज़मीन भी एक है और जिन्दगी की ज़रूरतें भी सब की समान हैं अतः किसी भी इन्सान को किसी दूसरे इन्सान पर रंग, नस्ल, भाषा या क्षेत्र के आधार पर कोई श्रेष्ठता प्राप्त नहीं है।

कुरआन में कहा गया है ''लोगो हम ने तुम को एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया है और तुम में क़ौम–क़बीले बनाए हैं, ताकि एक दूसरे की पहचान में आसानी हो'' (49:13)

हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने समानता की इस भावना को प्रबल करने के उद्देश्य से फ़रमाया था ''लोगो तुम्हारा पालनहार भी एक है और तुम्हारा बाप भी एक है, याद रखो किसी अरब वासी को गैर अरब वासी पर और किसी ग़ैर अरब वासी को अरब वासी पर और किसी काले को गोरे पर और किसी गोरे को किसी काले पर कोई फ़ज़ीलत प्राप्त नहीं है, यदि कोई श्रेष्ठता है तो केवल खुदा के ख़ौफ़, भक्ति और पवित्र आचरण के आधार पर ही हो सकता है।''

तीसरी ख़राबी जो शीघ्र अति शीघ्र धनवान बन जाने की भावना का पैदा होना है, जो देश के निर्माण में बाधक और योजनाओं के विफल होने का कारण है इसके विषय में इस्लाम ने जो इलाज बताया है वह ईश्वर का भय और परलोक की

जवाब देही का विश्वास मन में बिठाना है। जब यह यक़ीन होगा कि कोई शक्ति है जो हमें देख रही है और हमें उसके पास जा कर अपने कर्मों की जवाबदेही करना है तो इंसान हर तरह की धोखा धड़ी, रिश्वत और अधिकारों के दुरुपयोग से स्वयं को रोकने का प्रयत्न करेगा। देश प्रेम की भावना भी इस सम्बंध में प्रभावकारी सिद्ध हो सकती है मगर सच्चा देश प्रेम भी ईश्वर की सत्ता और परलोक की जवाबदेही पर विश्वास के मार्ग से ही मन में आता है। इस्लाम ने इंसान के नैतिक गुणों को धन दौलत पर महत्व दिया है। इस्लाम ने इंसान को दौलत का परस्तार बनने से रोका है और धन दौलत का उचित महत्व समझाया है। उसने इसे खुदा की नेमत बताने के साथ साथ इंसान के लिए फ़ितना और आज़माइश बता कर इससे सावधान रहने का संकेत दिया है। कुरआन कहता है ''और निगाह उठा कर भी न देखो दुन्या की शानदार ज़िनदगी की ओर जो हमने उनमें के विभिन्न लोगों को दे रखी है, वह तो हमने परीक्षा में डालने के लिए दी है, और तेरे खुदा की दी हुई आजीविका वही अच्छी है जो हलाल हो और देर पा (अधिक लाभकारी) है। (20:131)

''लोगो! तुम को माल की ज़ियादती की लालसा ने भुलावे में डाल दिया यहां तक कि तुम ने क़बरें जा देखीं, सावधान तुम्हें शीघ्र मालूम हो जायगा, पुनः सावधान! तुम्हें शीघ्र मालूम हो जायगा, सावधान यदि तुम जानते और विश्वास करते (तो भुलावे में न पड़ते) तुम अवश्य ही नर्क देखोगे, फिर उसको ऐसा देखोगे कि आंखों देखा विश्वास हो जायगा, फिर उस दिन तुम से नेमत (जो कुछ दुन्या में उपयोग किया) के विषय में पूछताछ होगी''।

(सूरः तकासुर)

यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि मुसलमानों की ज़िन्दगियों को देख कर किसी प्रकार की शंका इस्लाम के विषय में नहीं करना चाहिए। देश के बुद्धिजीवियों का कर्तव्य है कि वह इस्लाम और मुसलमान के अन्तर को समझें। मुसलमानों की ख़राबियों को इस्लाम की ख़राबी न समझा जाये।

इस्लाम के महत्वपूर्ण सिद्धान्तों को स्वीकार करके स्वतंत्रता के बाद देश में तेज़ी से फैली हुई बुराईयों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इस समय दुनिया की स्थिति अन्धेरे में हाथ पैर चलाने के समान है और उसके सामने एक बड़ा शून्य है वह किधर जाय कौन सा मार्ग अपनाये उसे नहीं मालूम। सारे इल्म, सारे फलसफ़े, सारी व्यवस्थायें फेल हो चुकी हैं। इस समय दुन्या को सही और सच्चे मार्गदर्शन की ज़रूरत है। प्रत्येक क़ौम अपनी संस्कृति, सभ्यता और अपने साहित्य तथा दर्शन पर गर्व करती है। अब दुन्या का धुर्वीकरण हो रहा है एक केन्द्र पर जमा होने की इच्छा दिनों दिन प्रबल होती जा रही है, इस स्थिति में ज़रूरत है एक ऐसे सन्देश की जो इन्सान दोस्ती, प्रेम महब्बत और समानता के आधार पर किसी में कोई भेद भाव न करे। सब का रिश्ता एक सृष्टा से जोड़े और उस मालिक की सत्ता को विश्व में स्थापित करे।

आज भारत उस स्थिति में है कि वह इस सन्देश को स्वीकार कर के यदि क़दम आगे बढ़ाये तो दुन्या का नेतृत्व शीघ्र ही उसके हाथ में होगा।

बुराईयों का एक मुख्य कारण इंसान के दिल से खुदा का ख़ौफ निकल जाना है। जब तक उसके दिल में खुदा के द्वारा प्रत्येक क्षण देखे जाने और निगरानी किये जाने का विश्वास मजबूत नहीं होगा और परलोक मे अपने छोटे बड़े प्रत्येक काम की जवाबदेही का यकीन नहीं होगा तब तक इंसान धोखाधड़ी, रिश्वत, अन्याय, झूठी गवाही, हत्या, अत्याचार, बलात्कार, आदि बुराइयों से स्वयं को नहीं रोक सकता। खुदा का डर यदि इंसान पर हर दम सवार रहे तो वह कोई अनैतिक कार्य नहीं कर सकता।

अतः निष्कर्ष यह कि भारत के पुनरुत्थान के लिए मुख्य रूप से हर प्रकार के भेद भाव और जातिवाद की गुटबन्दी को त्याग कर एक आदर्श समाज की स्थापना करना होगी।

दूसरे यह कि एक अकेले महान, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, सर्वश्रृष्टा, अर्रहमान की शुद्ध शक्ति और उसका भय सीखना होगा। जब हम भारत वासी उपरोक्त दो हकीकतों को स्वीकार करके कदम से क़दम मिला कर आगे बढ़ेंगे तो हर प्रकार की बुराइयों का स्वतः उन्मूलन आरम्भ होगा। उस समय महान भारत विकास के पथ पर आगे बढ़ते हुए निश्चित ही विश्व का नेतृत्व करेगा।

❖❖❖

मानव इतिहास का .....

लोगों से ज़ियादा महबूब न हो जाऊँ''। (सही बुख़ारी)

सहाब–ए–किराम रज़ि0 के जीवन चरित्र का अध्ययन करने से अन्दाज़ा होता है कि उनको आप सल्ल0 से बे पनाह और आखरी दर्जे की महब्बत थी, एक सहाबी से उनके शहीद किये जाने के वक़्त मालूम किया गया कि बताओ क्या तुम्हारी जगह मुहम्मद सल्ल0 को शहीद कर दिया जाए तुम इस पर राज़ी हो? वह जवाब देते हैं कि आप सल्ल0 को काँटा भी चुभे हमको यह भी गवारा नहीं, न कि उनको शहीद कर दिया जाए, सहाबा किराम को वास्तव में ऐसी ही महब्बत थी, और इसी महब्बत का मुतालबा सारे उम्मतियों से है कि आपसे ऐसी महब्बत हो जो अल्लाह के अलावा किसी से न हो, न माँ–बाप से, न औलाद से, न धन दौलत से, किसी भी चीज़ से इतना लगाव, इतनी महब्बत न हो जितनी अल्लाह के रसूल से, क्यों कि जब महब्बत होगी तो इन्सान आपके नमूने आदर्श पर अमल भी करेगा, आप की सुन्नत की पैरवी करेगा और आप की हर चीज़ को अच्छा भी समझेगा।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हर मुसलमान अपना जाइज़ा ले कि उसको अल्लाह के रसूल से कितनी महब्बत है, और इस महब्बत का अन्दाज़ा केवल कहने से नहीं बल्कि उस वक़्त होता है जब उसके मुक़ाबले में कोई चीज़ आ जाए, यदि हमने अल्लाह के नबी के लिए सच्ची और वास्तविक महब्बत पेश की तो उसके लिए बड़ी ख़ुशखबरी और इनआम है।

की मुहम्मद से वफ़ा तूने तो हम तेरे हैं।
ये जहाँ चीज़ है क्या, लौहो क़लम तेरे हैं।।

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

ग़ैब का ज्ञानः—

अल्लाह ने इन्सान को सोचने समझने और महसूस करने की जो चीजें दी हैं। वह उसी से काम ले कर नतीजा निकालता है। किसी चीज को चखता है तो उसके ज़ायके का फैसला करता है। किसी चीज को देखता है तो उसका रंग समझ में आता है। किसी चीज को सूंघता है तो उसकी महक मालूम होती है। किसी चीज को सुनता है तो आवाज से बहुत कुछ नतीजा निकालता है। किसी चीज को छूता है तो नरमी सख़ती चिकनेपन या खुरदुरेपन का एहसास करता है। लेकिन जो चीज़ उसके हवास (इंद्री) से बाहर हो उसके बारे में वह कुछ नहीं कह सकता। न हक़ीक़त तक पहुंच सकता है। जो चीज़ इदराक (इंद्री) में ना आ सके वह ग़ैब कहलाती हैं। आदमी ख़ुद किसी भी ग़ैब की बात को नहीं जान सकता अलबत्ता अल्लाह तआ़ला अपने नबियों को बहुत सी बातें बताता है। बस जितनी बातें उनको अल्लाह तबारक व तआला बता देता है उतनी बातें वह जान लेते हैं, अपनी तरफ से वह एक बात भी नहीं बता सकते।

आखरी नबी और नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी अल्लाह ने बहुत सी बातें गैब की बताईं, जितनी बातें अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बता दीं, वह उनके इल्म में आ गयीं। इसके अलावा जो ग़ैब की चीज़ें थीं वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए भी ग़ैब रहीं। और उनका इल्म आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नहीं था। बहुत सी आयतों और हदीसों में इसकी तफ़सील आती है। अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाते हैंः—

''कह दीजिए कि आसमान और ज़मीन में जो भी लोग हैं वह गैब नहीं जानते सिवाय अल्लाह के। और वह यह भी नहीं जानते कि वह कब उठाऐ जाएंगे।''

दूसरी आयत में हैः— ''यक़ीनन अल्लाह ही के पास क़यामत का इल्म है, और वही बारिश करता है, और रेहम (बच्चे दानी) के अंदर जो कुछ है उसको जानता है, और कोई भी नहीं जानता कि कल वह क्या करेगा, और कोई नहीं जानता कि किस जगह उसकी मौत होगी, बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला खूब जानता और पूरी ख़बर रखता है।''

(सूरः इनआ़म—59)

आगे और फरमायाः—

''और गैब की कुंजियां उसी के पास हैं, वही उनको जानता है।'' यानी गैब की सब बातें अल्लाह के इल्म में हैं। क़यामत जिसका आना यक़ीनी है, उसके वक्त का भी किसी को इल्म नहीं, न नबी को, न फरिश्ते को, न किसी वली को, न गौस एवं कुतुब को, सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उसका वक्त पूछा गया, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः— कि उसका इल्म

सिर्फ अल्लाह को है। और आयत शरीफा में इसको बयान कर दिया गया है। ''वह आप से कयामत के बारे में पूछते रहते हैं, कि कब उसके बरपा होने का वक्त है, कह दीजिए इसका इल्म तो मेरे रब के पास है। वही अपने वक्त पर इसको जाहिर कर देगा, आसमानों और ज़मीनों पर वह भारी है, अचानक ही वह तुम पर आ जाएगी। वह आपसे ऐसा पूछते हैं कि जैसे आप उसकी कुरेद में हैं। कह दीजिए इसका पता अल्लाह ही को है लेकिन अधिकतर लोग बे खबर हैं।

(सूरः आ़राफ–187)

इसी तरह और जो ग़ैब की बातें हैं उनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। जीत हो अथवा हार, सेहत हो अथवा बीमारी, मरना जीना हो अथवा गरीबी एवं मालदारी, और इनके अलावा जो भी ग़ैब की बातें हैं, उनको सिर्फ अल्लाह ही जानता है। जंग–ए–बद्र के अवसर पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अजीब स्थिति थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम नहीं था कि आगे क्या होने वाला है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रो–रो कर दुआएं फरमा रहे थे फिर अल्लाह ने उनको बताया कि आप गम न करें अल्लाह फरिश्तों से उनकी मदद करेगा और फतेह होगी।

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु तआ़ला अन्हा पर इल्ज़ाम लगाया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कई दिन परेशानी में गुज़ारे, खोज फरमाते रहे, मगर कोई बात सामने नहीं आयी। आखिर कार आयते शरीफ़ा उतरी और उसमें हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु तआ़लाअन्हा को इल्जाम से बरी करार दिया गया, तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फिक्र दूर हुई।

यह अकीदा होना चाहिए कि ग़ैब की कुंजियां सिर्फ अल्लाह के पास हैं। वह जिसको चाहता है ताले खोल कर उसमें से जितना चाहता है दे देता है। बस जो कोई इस बात का दावा करे कि मेरे पास ऐसा इल्म है कि जब चाहूं उस में से ग़ैब की बातें मालूम कर लूं और आइंदा की बातों को मालूम करना मेरे काबू में है वह बड़ा झूठा है और जो किसी नबी या वली के बारे में यह सोच रखे वह शिर्क में जा पड़ता है। इसलिए यह सिर्फ अल्लाह की सिफत है कोई दूसरा इसमें शरीक नहीं। कुर्आन–ए–मजीद में खुद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहलवा दिया गया।

''आप बता दीजिए कि मैं अपने लिए कुछ भी नफा नुक़सान का मालिक नहीं सिवाय उसके जो अल्लाह चाहे। और अगर मैं ग़ैब की बात जानता तो बहुत कुछ अच्छी–अच्छी चीजें जमा कर लेता, और मुझे तकलीफ़ भी नहीं पहुँचती, मैं तो उन लोगों के लिए डराने वाला और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं जो मानते हैं।'' (सूरः आ़राफ–188)

यह बात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहलवाई जा रही है जो सब नबियों के सरदार हैं, दुनिया में जिस किसी को बुजुर्गी हासिल हुई, वह सब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए हासिल हुई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं ''मैं खुद अपने नफा नुकसान का मालिक नहीं।

शेष पृष्ठ..39...पर

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

मुहम्मद बिन क़ासिम की मृत्यु पर शोकः–

मुल्तान की विजय के बाद मुहम्मद बिन क़ासिम ने आगे बढ़ कर सीमावर्ती क़िलों को जीत लिया और कैरज को अधीन करने का इरादा कर ही रहा था कि उसको हज्जाज की मृत्यु की सूचना मिली। यह सन 95 हि0 था, सिन्ध इराक़ के शासक के अन्तर्गत था। इसलिए मुहम्मद बिन क़ासिम वहां के समर्थन से वंचित हो गया। हज्जाज के मरने के आठ महीने के बाद 96 हि0 में वलीद बिन अब्दुल मलिक की भी मृत्यु हो गयी। उसके बाद सुलेमान शासक बना जिसको हज्जाज से दुश्मनी की सीमा तक मतभेद था। हज्जाज यद्यपि मर चुका था। लेकिन उसके समर्थकों ने सुलेमान से बदला लिया सुलेमान ने इराक़ का शासक यज़ीद बिन मुहल्लब को बनाया जो हज्जाज और उसके परिवार का पुराना दुश्मन था। वह इराक़ का शासक बना तो मुहम्मद बिन क़ासिम उसकी नज़रों में खटका। उसने उसको पदमुक्त कर दिया और उसके स्थान पर यज़ीद बिन अबी कब्शा सकसकी को नियुक्त कर दिया और जब मुहम्मद बिन क़ासिम कैरज या कोरज पर विजय प्राप्त कर चुका था तो यज़ीद ने सिन्ध पहुँच कर उसको गिरफ़्तार कर लिया और उसके हाथ हथकड़ी और पैर में बेड़ी डाल कर इराक़ भेज दिया। जहां वह क़ैदख़ाने में डाल दिया गया और वहीं उसकी मृत्यु हो गयी। अरब और सिन्ध के लोग इस शोक पर खून के आँसू बहाते रहे। एक अरबी कवि हम्ज़ा बिन बैज़ अल–हनफ़ी ने अपने अरबी शोक गीत में कहा कि बहादुरी, दिल की बड़ाई और दानशीलता मुहम्मद बिन क़ासिम के हिस्से में थी। वह 17 वर्ष की उम्र में लोगों का सरदार बन गया। हालांकि उस समय उसके उम्र के लोग जवानी की मस्तियों और दुनिया के सौनदर्य में गिरफ़्तार हो कर नेतृत्व की वास्तविकता से बेखबर थे। बलाज़री ही का कथन है कि हिन्दुस्तान वालों ने मुहम्मद बिन क़ासिम के लिए विलाप किया और उसकी एक मूर्ति कैरज में तैयार की।

मुहम्मद बिन क़ासिम की उपलब्धियों पर टिप्पणीः–

शमसुल उलमा जका–उल्लाह ने मुहम्मद बिन क़ासिम की उपलब्धियों पर टिप्पणी करते हुए लिखा हैः–

''यद्यपि मुहम्मद बिन क़ासिम की किशोरावस्था और जवानी का समय था, लेकिन वह बड़ा बुद्धिमान और बहादुर था। तलवार और बुद्धिमानी दोनों से काम लेता था। यदि संयोग से कहीं तलवार से कुछ दमन किया तो बुद्धिमानी से उसकी बराबरी भी अवश्य की। यदि कहीं मूर्तियों को तोड़ा, उसके साथ मन्दिरों की मरम्मत करने का भी आदेश दे दिया। यदि कहीं लूटमार से दुश्मनों का बुरा हाल किया तो उसको बैतुलमाल से मुआवजा भी दिला दिया। हिन्दुओं का जो पुराना तरीक़ा था कि मालगुज़ारी की दौलत में से तीन प्रतिशत राजा के ख़ज़ाने में इसलिए सम्मलित करते थे कि इस रूपये से ब्राह्मणों की सेवाओं का मुआवज़ा

दिया जाए। वह उसने पहले की तरह कायम रखा। यहां जो व्यक्ति हिन्दुस्तानी, सिन्धी योग्य मिला उसके महत्व को पहचाना बल्कि यहां के योग्य लोगों को ढूँढ–ढूँढ कर निकाला और आगे बढ़ाया। उसने यहां के मन्त्रियों को मन्त्री और सलाहकार नियुक्त किया और अपने पास उनको रखा। अर्थात इंसान को पहचानने और उनको तसल्ली देने का मामला उसी पर समाप्त था। दुश्मनों के साथ जो उसने अच्छा व्यवहार किया था वह छोटे लोग कहाँ करते हैं''।

वर्तमान युग के हिन्दू इतिहासकार मुसलमानों के युग के इतिहास पर टिप्पणी करने में अपने व्यक्तिगत और साम्प्रदायिक भावनाओं में डूब जाते हैं, फिर भी उनके क़लम से प्रशंसा के शब्द कभी–कभी निकल पड़ते हैं। यदुनाथ सरकार अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''तारीख औरंगजेब (औरंगज़ेब का इतिहास)'' में एक स्थान पर सामान्य वार्ता में यह लिख गए:

''आरम्भ के अरब विजेता विशेष रूप से सिन्ध के विजेताओं ने यह बुद्धिमानीपूर्ण और लाभदायक रणनीति अपनाये रखा था कि वह ग़ैर मुस्लिमों के पूजा स्थलों और धार्मिक रिवाजों को बिल्कुल नहीं छेड़ते। जब वह किसी शहर पर अधिकार कर लेते तो वहाँ की ग़ैर मुस्लिम आबादी को इस्लाम धर्म स्वीकार करने को कहते, यदि वह स्वीकार कर लेते तो उनको वही अधिकार प्राप्त हो जाते जो विजेताओं को प्राप्त होते। अन्यथा फिर उनको जिज़िया अदा करना पड़ता जिसके बाद उनको अपने धर्म के रीति–रिवाज अदा करने की स्वतन्त्रता होती।''

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व प्रो0 डॉ0 ईश्वरी प्रसाद मुहम्मद बिन क़ासिम की उपलब्धियों पर जहां आलोचनाएं की हैं वहाँ यह भी लिखते हैं कि सिन्ध पर मुहम्मद बिन क़ासिम का आक्रमण इतिहास की रोमांचक कहानियों में से एक है। उसकी हँसती–खेलती नौजवानी, उसकी दिलेरी, उसकी बहादुरी और सैनिक अभियानों के बीच उसके सज्जन व्यवहार और अन्त में उसके पतन की शोक भरी कहानी से उसके व्यक्तित्व के चारों तरफ़ शहादत का घेरा दिखायी देता है। उसने अपनी नौजवानी में सैनिक नेतृत्व का जो जौहर दिखाया उससे उसके व्यक्तित्व से बहुत आशाएं बढ़ गयीं। इसीलिए वह हिन्दुस्तान के अभियान पर भेजा गया। हज्जाज ने उसके साथ 6000 चुने हुए सीरियाई और ईराकी सिपाही भेजे। उसके साथ इतने ही ऊँटों के हथियारबन्द सवार थे। तीन हज़ार ऊँटों पर युद्ध सामग्री लादी गयी, मुहम्मद बिन क़ासिम मकरान पहुंचा तो यहां के शासक मुहम्मद हारून ने और सैनिक सामग्री और पाँच मिन्जनीक (राकेट लॉचर) उपलब्ध किए जो दीबल भेज दिए गए। इन अरब सिपाहियों के अतिरिक्त मुहम्मद बिन क़ासिम ने अपने झण्डों के नीचे उन जाटों और मेदियों को इकट्ठा किया जो हिन्दुओं की न्यायप्रियता का प्रदर्शन न करने वाली सरकार से परेशान थे और बहुत अपमान सहन कर रहे थे। वह घोड़े पर सवार नहीं हो सकते थे। उनको अच्छे कपड़े पहनने की मनाही थी। उनको नंगे सिर रहने का आदेश था। इन अपमानों से वह मात्र लकड़हारे और भिश्ती बन कर रह गए थे। उनके दिलों में ऐसा द्वोष भरा हुआ था कि उन्होंने अपने भाग्य को तुरन्त एक विदेशी के सुपुर्द कर दिया।

.....जारी.....

❖❖❖

क्रोध

क्रोध रहे जो वश में अपने तब तो अच्छा साथी है। निकल जाए गर वश से बाहर फिर तो पागल हाथी है।।

डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0

क्रोध जीवधारियों की एक आंतरिक दशा है जो अप्रिय बात पर उत्पन्न होती है। मधु मक्खियां जब दौड़ा–दौड़ा कर काटती अर्थात डंक मारती हैं तो क्रोध में होती हैं। इसलिए कि उनके साथ किसी ने अप्रिय कर्म किया है, उनको छेड़ा है। काटने वाला जानवर जब किसी को काटता है या काटने के लिए दौड़ाता है तो वह क्रोध में होता है। सींग से मारने वाला पशु जब किसी को मारता है या मारने के लिए दौड़ाता है तो वह क्रोध में होता है।

मनुष्य के लिए क्रोध जहां अति आवश्यक और लाभदायक है वहीं वह उसके लिए बड़ा हानिकारक भी है जिस मनुष्य में क्रोध नहीं तो अवश्य ही उसको मानसिक रोग है। क्रोध के बिना मनुष्य मुर्दा है। क्रोध ही से मनुष्य अपनी रक्षा कर पाता है। अपनी संतान अपनी स्त्री और अपने कुल की रक्षा करता है। क्रोध ही से आदमी अपनी इज्जत व आबरू बचाता है। क्रोध न हो तो लोग घर का सामान उठा ले जाएं और वह मुसकुराता रहे।

सच यह है कि धर्म रक्षा (दीन की हिफाज़त) भी क्रोध द्वारा होती है। वास्तव में जब किसी धर्मी के सामने अधर्म की बात आती है तो उसको बुरा लगता है। वह उसको रोकना चाहता है फिर भी अधर्मी नहीं मानता तब धर्मी में स्वाभिमान उत्पन्न होता है जो शीघ्र ही क्रोध में बदल जाता है परन्तु यह क्रोध दूसरे क्रोधों से भिन्न होता है। यह केवल परमात्मा (अल्लाह) के लिए होता है। यह नियम बद्ध होता है। यहां क्रोधी अपने धर्म की रक्षा में अपना सब कुछ न्योछावर करने को तैयार हो जाता है।

हानिकारक क्रोध वह है जिसमें क्रोधी अपनी बुद्धि खो देता है। यह क्रोध अपनी आत्मा (नफ़्स) के लिए होता है। यही क्रोध गाली बकवाता है, बोल चाल बन्द करवाता है, मार पीट करवाता है, यहां तक कि हत्या करवा देता है।

इसी क्रोध ने हीरोशीमा (जापान) पर ऐटम बम गिरवाया है। अमरीका के *World Tower Center* को नष्ट किया है, अफ़गानिस्तान को तबाह किया है कुवैत को बेदखल किया है, इराक का विनाश किया है इस क्रोध की हानि की कोई सीमा नहीं इस का अंत इलाही (ईश्वर) क्रोध ही से हो पाता है।

क्रोध बड़ा लाभदायक भी है और बड़ा हानिकारक भी जो क्रोध बुद्धि के अधीन रहता है उससे बड़ा काम लिया जा सकता है कभी परिस्थिति ऐसी आ जाती है कि ऐसे स्थान पर क्रोध अपना काम आरंभ कर देता है जहां बड़ी सावधानी चाहिए जैसे छोटे बच्चों की शिक्षा दीक्षा के अवसर पर। यह मनुष्य की प्रकृति है कि उसको छोटे बालकों पर भी क्रोध आता है और फिर वह अनुचित कर्म

कर गुज़रता है। अधिकांश देखा गया है कि कोमल हृदय वाली दयालू मां भी कभी क्रोध में अपने अबोध बालक को पीट पाट कर रख देती है। पढ़ी लिखी माएं तो ऐसा नहीं करतीं मगर बहुत सी माएं ऐसा कर गुज़रती हैं। अभी हमारे देश में ऐसा प्रबन्ध नहीं हो सका है कि हर मां को समझाया जा सके और उनको पालन पोषण का प्रशिक्षण दिया जा सके। यह बुराई अभी तक कुछ स्कूल टीचरों में विद्यमान है कि छोटे बच्चों को हाथ या छड़ी से पीट देते हैं। और यह सब क्रोध के अन्तर्गत होता है। यह ग़लती जिन टीचरों से हो रही है उनको चाहिए कि वह अपना सुधार करें।

बच्चों की शिक्षा दीक्षा के लिए उनके उत्तरदायी माता पिता तथा शिक्षकों के लिए ज़रूरत है कि वह बालकों की त्रुटियों पर अपनी अप्रियता का इज़हार क्रोध से करें परन्तु मार पीट से बजें।

यह बात छोटे मुंह बड़ी बात जैसी है परन्तु है सत्य कि जिस व्यक्ति को अपने क्रोध पर नियंत्रण न हो वह बालकों का शिक्षक बनने की योग्यता नहीं रखता। टीचर के चयन के इन्टरव्यू में जहां शैक्षिक योग्यता देखी जाए वहीं टीचर की आदतों के विषय में भी जानकारी ली जाए जो अभ्यार्थी अपने क्रोध पर नियंत्रण न पाता हो तो उसे कदापि न चुना जाए यदि वह अनट्रेन्ड हो तो फिर उसे अन्डर ट्रेनिंग रख कर उसको क्रोध पर नियंत्रण पाने की ट्रेनिंग से गुजारा जाए। उसको इस बात की ट्रेनिंग भी दी जाये कि वह निष्पाप क्रोध भरे बालक को किस प्रकार मुस्कुराने पर मजबूर कर देगा।

कहा जाता है कि गुस्सा हराम है। परन्तु क्रोध वही हराम है जो अपने स्वार्थ के लिए हो अपने व्यक्तित्व के लिए हो, जिस पर नियंत्रण न पा कर क्रोधी स्वयं अप्रिय घटना कर डाले परन्तु जो क्रोध अल्लाह के लिए हो बुराईयों को मिटाने के लिए हो वह क्रोध अभीष्ट है प्रिय है जब कि क्रोधी को उस पर नियंत्रण हो।

इस्लाम ने क्रोध पर नियंत्रण के उपाए बताए हैं बताया गया कि क्रोधी खड़ा हो तो बैठ जाए, बैठा हो तो लेट जाए, पानी पी ले, वुजू कर ले यह सारे उपाय जांचे परखे हुए शतप्रतिशत सफल हैं।

पवित्र कुर्आन और नबी करीम सल्ल0 की हदीस में क्रोध पर नियंत्रण की शिक्षा दी गई है बताया गया किः जन्नती लोगों की पहचान यह है कि वह समृद्धि तथा दीनता हर हाल में अल्लाह की राह में खर्च करते हैं और जब उन्हें गुस्सा आता है तो उसे पी जाते हैं और उस पर अमल नहीं करते। (3:134)

इमाम अहमद ने जारिया बिन कुदामा अस्सुदी से रिवायत की है उन्होंने रसूलुल्लाह सल्ल0 से प्रार्थना की कि ऐ अल्लाह के रसूल मुझे कोई लाभदायक बात बताइये परन्तु लम्बी बात न हो ताकि मैं उसे याद कर लूं तो आप सल्ल0 ने फरमाया गुस्सा मत करो सहाबी ने बार बार अपना प्रश्न दुहराया और हर बार आपने उनसे यही कहा गुस्सा मत करो। जन्नत वालों की पहचान में कुर्आन मजीद में एक जगह और बताया गया है : जब उन्हें गुस्सा आता है तो लोगों को मुआफ़ कर देते हैं। (42:37)

शेष पृष्ठ..34...पर

स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों का योगदान

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

भारत का स्वतंत्रता इतिहास साक्षी है कि सुल्तान टीपू शहीद, सैय्यद अहमद शहीद, इस्माईल शहीद और अशफाकउल्लाह खाँ जैसे वीर सपूतों के बलिदानों के बदौलत आज हम खुली हवा में साँस ले रहे हैं। देश की माटी से अंत तक प्रेम करने वाले इन रणबांकुरों में राष्ट्र के प्रति गजब की श्रद्धा और भक्ति थी। उन्होंने अपने वतन के लिए खून का एक–एक कतरा बहा दिया। फाँसी का फंदा चूम लिया और फिरंगियों को देश से निकलने पर विवश किया। अतः उनकी गाथा को केवल रस्मी तौर पर याद नहीं करना है अपितु उसे अपनी हर साँस और धड़कन में बसाना होगा। भारत के इन सपूतों ने दासता की बेडियाँ तोड़ने के लिए जिस प्रकार अपने प्राणों की आहुतियाँ दी हैं, तो कम से कम हमारा भी नैतिक कर्तव्य बनता है कि हम वीर बलिदानियों को सहेजते हुए उनके सिद्धान्तों, आदर्शों, और मूल्यों को अक्षरशः आत्मसात करें और नई पीढ़ी को भी स्वर्णाक्षरों में अंकित स्वतंत्रता आंदोलन के सही व सत्य इतिहास को पढ़ने और उससे प्रेरणा लेने हेतु प्रोत्साहित करें। परन्तु कुछ संकीर्ण इतिहासकारों ने भारतीय स्वतंत्रता इतिहास में केवल हिन्दुओं के योगदान का बखान किया है और मुसलमानों के योगदान को पूरी तरह नकार दिया है। वैसे भी इतिहास को झुठला कर पेश करना एक पुरानी कला है। जिसका उपयोग फासिस्ट शक्तियाँ अपने लाभ के लिए करती रहीं हैं। उनके अनुसार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की कोई भूमिका नहीं है बल्कि उन्होंने तो स्वतंत्रता आन्दोलन के साथ विश्वासघात किया है।

इतिहास साक्षी है कि फिरंगियों के विरुद्ध पहली आवाज़ 1585 ई0 में शैख अहमद सरहन्दी ने उस समय उठाई जब न बादशाह को आभास था और न जनता को आशंका थी। आपने आज़ादी की जो मशाल जलाई थी उस पर लम्बे समय तक उनके अनुयायी अपने प्राणों की आहुति देते रहे। परन्तु उसके बावजूद भी 1707 ई0 में हज़रत औरंजेब आलमगीर रह0 की मृत्यु के बाद देश बिखर गया और लुटेरों के अधीन हो गया। ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध जितनी भी जंगें छेड़ी गईं उसके अगुवा मुसलमान ही थे। उस सम्बन्ध में सिराजुद्दौला का नाम गर्व से लिया जाता है जिन्होंने 1700 ई0 से 1756 ई0 तक अंग्रेज़ों से बराबर लड़ाईयाँ लड़ीं। उसके बाद भारत का गर्व कहे जाने वाले शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रह0 ने कमान संभाली और लम्बे समय तक अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे करते रहे। उन्हीं की प्रेरणा से शेरे मैसूर सुल्तान टीपू शहीद ने अंग्रेज़ों के छक्के छुड़ा दिये। किन्तु विश्वासघातियों ने उनकी उस सफलता को बहुत दूर तक जाने न दिया। उनकी शहादत पर अंग्रेज़ जनरल ने कहा था कि ''आज से हिन्दुस्तान हमारा है''। ये सत्य है कि इसके बाद ही फिरंगियों के पाँव

अधिकतर स्थानों पर आसानी से जमने लगे। इस घटना के कुछ वर्षों बाद शाह अब्दुल अजीज देहलवी रह0 ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध फतवा क्या दिया उनकी नींदें हराम हो गईं। जगह–जगह आज़ादी के शोले भड़कने लगे। हौसलों ने अंगडाईयाँ लेनी शुरु कर दीं और उसका सार्थक परिणाम भी दिखाई देने लगा। इसी से प्रभावित हो कर उन्नीसवीं सदी के आरम्भ में एक ज़बर्दस्त इन्क़लाब बरपा हुआ जिस की कमान हज़रत सैय्यद अहमद शहीद रह0 के हाथों में थी। उत्तर भारत से चली ये क्रान्ति देश के अधिकतर क्षेत्रों में फैल गई और उनके समर्थको के माध्यम से लगातार आधी सदी तक चलती रही। 1872 ई0 में अंडमान में लार्ड मीयू को मौत के घाट उतारना इसी क्रान्ति का परिणाम था। क़त्ल करने वाले मर्दे मुजाहिद शेर अली को फाँसी पर लटका दिया गया। इस घटना के कुछ माह पूर्व 1871 ई0 में स्वतंत्रता सेनानी अब्दुल्लाह पंजाबी को जस्टिस नारमन को मौत की नींद सुलाने के दोष में सूली पर चढ़ा दिया गया था।

पश्चिम बंगाल के तीतू मियाँ उर्फ तीतू मीर 1832 ई0 में अंग्रेज़ों के विरुद्ध बड़ी बहादुरी से लड़े और अंग्रेज़ समर्थक जमींदारों के विरुद्ध जम कर आवाज़ उठाई। प्रथम विश्व युद्ध के आसपास जिन मुसलमानों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में शिरकत की उनमें मौलाना अबुल कलाम आज़ाद सबसे आगे थे। मौलाना बाद में राष्ट्रीय काँग्रेस के सबसे बड़े नेता बन कर उभरे। वह मध्य–पूर्व में ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध बने कई क्रान्तिकारी दस्तों से भी जुड़े थे। उन्होंने ही ''हबीबुल्लाह'' नामी दस्ते की बुनियाद रखी थी। उस क्रान्तिकारी दस्ते के माध्यम से उन्होंने बड़ी संख्या में दूसरे देश के देश प्रेमियों और बुद्धिजीवियों को प्रभावित किया।

भोपाल के मौलाना बरकतुल्लाह ने न्यूयार्क, पेरिस, टोक्यो, मास्को और काबुल आदि जाकर वहां के लोगों को भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में सहयोग के लिए उभारा। सैय्यद उबैदुल्लाह, मुहम्मद अब्दुल्लाह, फतह मुहम्मद और मुहम्मद अली आदि उन क्रान्तिकारियों में से हैं जिनका नाम दस्तावेज में प्रसिद्ध रेशमी रूमाल आन्दोलन के सम्बन्ध में आया। इस आन्दोलन के संस्थापक और सेनापति शेखुलहिन्द मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी रह0 थे। जिन्होंने मौलाना अबुल कलाम आज़ाद डॉ0 मुख्तार अहमद अंसारी गाजीपुरी, मौलाना उबैदुल्लाह सिन्धी और हुसैन अहमद मदनी जैसे महान क्रान्तिकारियों के साथ मिल कर अंग्रेजों के विरुद्ध जबर्दस्त जंग छेड़ दी जो बहुत हद तक अपने मकसद में सफल भी रही किन्तु यहाँ भी विश्वासघाती आड़े आ गये जिसके कारण बड़ी संख्या में मुसलमान फौजी और छात्र क्रान्तिकारी गिरफ़्तार कर लिये गये और उन्हें कठोर कारावास का दण्ड दिया गया।

1885 ई0 में जब काँग्रेस की स्थापना हुई तो उसके प्रारम्भिक चरण में बदरूद्दीन तैय्यब और रहमतुल्लाह सायानी जैसे लीडरों ने काँग्रेस अध्यक्ष पद पर रह कर जंगे आज़ादी के कारवां को और आगे बढ़ाया। उसी दौर में अल्लामा शिब्ली नोमानी, मौलाना कासिम नानौतवी और मौलाना सेराजी जैसे लोगों ने अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। देश के विभिन्न क्षेत्रों में अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी, डॉ0 सैफुद्दीन किचलू, आसिफ अली, मौलाना हसरत मोहानी, लाहौर के डॉ0 आलम, उत्तर–पश्चिम सीमावर्ती क्षेत्र के खान अब्दुल गफ़्फार खाँ, हकीम अजमल खाँ, हकीम नाबीना गाजीपुरी, हकीम अब्दुर्रज्जाक गाजीपुरी, टी0ए0 शेरवानी, जमींदार के सम्पादक

मौलाना जफ़र अली खाँ, अल अमीन के एडीटर अब्दुर्रहमान आदि जैसे लोगों ने स्वतंत्रता आन्दोलन में बड़ी कुर्बानियाँ दी हैं।

अली बन्धुओं मौलाना मुहम्मद अली जौहर और मौलाना शौकत अली जौहर को महात्मा गाँधी अपना दोनों हाथ कहते थे, उन दिनों महात्मा गाँधी की जय जयकार के साथ अली बन्धुओं की भी जय जयकार होती थी। खिलाफत आन्दोलन में अली बन्धुओं और उनकी माँ बी अम्माँ की बड़ी भूमिका रही है। मौलाना हसरत मोहानी ऐसे पहले काँग्रेसी थे जिन्होंने 1921 ई0 में काँग्रेस के सम्मेलन में ''पूर्ण स्वतंत्रता'' का प्रस्ताव पेश किया किन्तु काँग्रेस इस प्रस्ताव को समर्थन देने से बचती रही। 1922 ई0 में जमीयतुल उलमा और खिलाफत कमेटी की संयुक्त बैठक में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास किया गया किन्तु यहां भी काँग्रेस मौन रही। 1926 ई0 में भी अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी की अध्यक्षता में जमीयतुल उलमा की विशेष बैठक में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास किया गया। आखिर कार थक–हार कर 1929 ई0 में काँग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पास कर दिया।

1919 ई0 में जब जमीयतुल उलमा अस्तित्व में आई तो देश की राजनीति में नया मोड़ आया। 1920 ई0 में मौलाना महमूदुल हसन देवबंदी रह0 की अध्यक्षता में स्वतंत्रता आन्दोलन में एक बार फिर मुसलमानों से जम कर हिस्सा लेने की ज़ोरदार अपील की गई कि वह ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा दी गई उपाधि और पुरस्कारों को लौटाएं और ब्रिटिश वस्तु व स्कूलों, कालेजों में उनकी नीति के अन्तर्गत दी जाने वाली शिक्षा का बहिष्कार करें। अतः इस बायकाट का जबर्दस्त प्रभाव पड़ा और लोगों ने जमीयतुल उलमा की अपील की लाज ही नहीं रखी बल्कि अंग्रेज़ों की कमर तोड़ दी।

1929 ई0 में मुसलमानों ने एक नई पार्टी बनाई। नेशलिस्ट मुस्लिम पार्टी नामक ये सियासी पार्टी अंग्रेज़ों से दो–दो हाथ करने के लिए बनाई गई थी। मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इसके अध्यक्ष और मुख्तार अहमद अंसारी गाजीपुरी कोषाध्यक्ष बनाये गये। इसी मकसद से पंजाब में मजलिसे अहरार नामक पार्टी बनाई गई जिसके अध्यक्ष अफजलुल्हक़ थे। इसी प्रकार 1940 ई0 तक दस राजनीतिक दल अस्तित्व में आये उनमें खिलाफत कमेटी, कश्मीर नेशनल कान्फ्रेंस और मोमिन कान्फ्रेन्स आदि की स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

ये तो स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों के योगदान और बलिदान की हल्की सी झलकियाँ हैं। स्वतंत्रता के लिए चलाया जाने वाला कौन सा ऐसा आन्दोलन या युद्ध है जिसमें मुसलमानों ने जम कर हिस्सा न लिया हो? बल्कि अधिकतर आन्दोलन और युद्ध के सेनापति व अगुवा वही थे। केवल मुस्लिम लीग की भूमिका को आधार बना कर स्वतंत्रता संग्राम में मुसलमानों की भूमिका पर फैसला नहीं किया जा सकता। मुस्लिम लीग उसी प्रकार समस्त भारतीय मुसलमानों की पार्टी नहीं थी जिस प्रकार हिन्दू महासभा समस्त भारतीय हिन्दुओं की पार्टी नहीं थी। जिस आर0एस0एस0 और हिन्दू महासभा का जंग आज़ादी में खून का एक कतरा भी न बहा और न ही एक रात के लिए वह जेल गये हों वही आज मुसलमानों पर गद्दारी का इल्ज़ाम लगा रहे हैं। विश्व में क्या इससे भी बड़ी कोई हास्यासपद बात हो सकती है?

❖❖❖

हज और कुर्बानी का पैग़ाम

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

हज और कुर्बानी इस्लाम की बहुत ही महत्वपूर्ण इबादतें हैं और दोनों ही इस्लामी कलेण्डर के आखरी महीने ''जिलहिज्जा में अदा की जाती हैं। यह दोनों इबादतें हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह के इश्क़ और हजरत इस्माईल अलै0 की कुर्बानी की यादगार हैं, और अल्लाह के सामने पूर्ण समर्पण, बन्दगी के इज़हार और उसकी खुशनूदी व रजा को हासिल करने का अहम ज़रीया व साधन हैं, जिनका नसीबा जागा और जिन पर अल्लाह ने करम फरमाया और जिनको अपने घर तक आने का सामर्थ्य दिया, वह अल्लाह और उसके नबी के घर की ज़ियारत को गये, उनमें से कितने खुशनसीब वह हैं जो दो साल से कोरोना काल की पाबंदियों के हटने का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे और कितने तो अपने दिल में हसरत लिये–लिये अल्लाह को प्यारे हो गये। अल्लाह उनकी आरजूओं के मुताबिक़ उन पर फज्ल फरमाये।

हज और कुर्बानी दोनों अल्लाह और उसके रसूल की महब्बत में लीन हो कर करने वाली इबादतें हैं, हर हाजी को यह आदेश है कि वह हज का सफर शुरु करने से लेकर वापस आने तक और आने के बाद भी अपने आप को रब का बंदा बनाने की भरपूर कोशिश करे और पूरे सफर में वह सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की बड़ाई बयान करे और खूब खूब दुरूद व सलाम का नजराना पेश करे और खूब तौबा व इस्तिग़फार कर के अपने अल्लाह और रसूल को खुश व राजी करने की कोशिश करे और नाम व नमूद शोहरत, रिया और दिखावे से बिल्कुल दूर रहने का प्रयास करे, और अपनी अना, अपनी ख्वाहिश अपनी पसंद, नापसंद सब को तज दे तब जा कर इसको हज्जे मबरूर की सआदत मिलती है और हज्जे मबरूर का बदला सिवाय जन्नत के और कुछ नहीं।

अब हाजियों की वापसी का सिलसिला भी शुरु हो चुका है और नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''जिसने हज किया और उसने बेहयाई और फिस्क़ व फुजूर नहीं किया, वह ऐसा लौटता है जैसे आज ही उसकी माँ ने उसे जना हो।''

मालूम यह हुआ कि एक हाजी जब हज से लौटता है तो गुनाहों से धुल–धुला कर एक बच्चे की तरह हो जाता है, इसी लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 का फरमान है कि हाजी जब लौट कर आये तो उससे जा कर मिलो और उससे अपने बखशिश की दुआ कराओ।

अब हर हाजी की जिम्मेदारी है कि अल्लाह ने जो उसे अपने दर पर बुला कर सम्मानित किया है तो उसकी लाज रखे और हर हर कदम फूँक–फूँक कर रखे और अल्लाह की वहदानियत का वैसे ही गुनगान करे जैसे वह पूरे सफर में करता रहा है, वह अपने आप को अल्लाह व रसूल की महब्बत में लीन रखे, पहले से ज़ियादा नमाज़ों, दुआओं, तिलावत और जिक्र व अजकार का एहतिमाम रखे और अपने आपको हर क़िस्म के रुसूम व रिवाज, बिदआत व खुराफात से दूर रखे, और कोई ऐसा काम न करे जिससे इस्लाम और मुसलमान बदनाम हों या स्वयं उसकी इज्जत पर धब्बा आये, उसे समाज के लिए एक नमूना बन कर रहना चाहिए ताकि लोग उसे देख कर अपनी ज़िन्दगी में तबदीली लायें और कहें कि वास्तव में यह हाजी कहे जाने का मुस्तहिक है। ◆◇◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः किसी की वफ़ात पर या शहादत पर गम मनाना कैसा है?

उत्तरः किसी मुसलमान की वफ़ात या शहादत पर उसके घर वालों के लिए तीन रोज़ तक गम मनाना जाइज़ है, अलबत्ता मरने वाले की बीवी के लिए ग़म की मुद्दत चार माह दस दिन है, उसके बाद ग़म ज़ाहिर करने की इज़ाज़त नहीं, अलबत्ता अगर किसी पर गैर इख़्तियारी तौर पर ग़म का असर रहे तो यह उसके लिए मुआफ़ है।

प्रश्नः मुहर्रम में हज़रत हुसैन रजियल्लाहु अन्हु की शहादत याद करके ग़म मनाना कैसा है?

उत्तरः सय्यिदुना हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत को 1325 वर्ष गुज़र गये अब उनकी याद में ग़म मनाने की शरीअ़त में गुंजाइश नहीं, अगर उनकी मुसीबतें याद आने पर दिल भर आए और आँखें नम हो जाएं तो कोई हरज नहीं मगर आपकी शहादत का ज़िक्र करके ग़म ताज़ा करना और उस पर नौहा पढ़ कर ग़म मनाना जाइज़ नहीं।

सहाब—ए—किराम ने हज़रत नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफात को सबसे ज़ियादा ग़म का हादिसा समझा था और उसका इतना असर हुआ था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसे बहादुर इन्सान ने अपने हवास खो दिये थे, लेकिन फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की वफ़ात की तारीख़ हर साल आती रही कोई एक रिवायत भी नहीं मिलती कि सहा—बए—किराम ने कभी आपका गम मनाया हो खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महबूब चचा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ग़जवए उहुद में शहीद हुए उसके बाद सय्यिदुश्शुहदा की शहादत की तारीख़ बार बार आई मगर हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी ग़म की तारीख़ न मनाई बिइरे मऊना में 69 सहाबा शहीद कर दिये गये हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बड़ा दुख हुआ, आपने महीनो शहीद करने वालों को नमाज़ में बद दुआ दी मगर फिर बार बार उनकी शहादत की तारीख़ आई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कभी उनकी शहादत की तारीख़ पर ग़म न मनाया न सहाबा ने ग़म मनाया, इन बातों से मालूम हुआ कि इस्लाम में किसी मरने वाले या शहीद हो जाने वाले की याद में साल दर साल ग़म मनाने की गुंजाइश नहीं है लिहाज़ा हम को चाहिए कि हम हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की शहादत का ग़म हर साल मुहर्रम में मनाने की रस्म को छोड़ दें कि शरअ़न यह जाइज़ नहीं है।

प्रश्नः ताज़िया दारी का क्या हुक्म है?

उत्तरः ताज़िया दारी जो बर्रे सग़ीर (उपमहाद्वीप) में रायज़ है ना जायज़ व हराम है इस सिलसिले में बरेलवी मस्लक के उल्मा का भी यही फ़तवा है। आला हज़रत अहमद रज़ा खां उनके ख़लीफा हशमत अली खां और साहब ज़ादे मुस्तफ़ा रज़ा मुसन्निफ बहारे शरीअत अल्लामा अमजद अली इन सब

ने ताज़ियादारी को नाजायज़ लिखा है।

प्रश्नः ताज़िया के सामने हलवा शीरीनी और शरबत रखना कैसा है?

उत्तरः नाजायज़ है और नज़र वग़ैरह मान कर रखना शिर्क है।

प्रश्नः एक मुसलमान बीमार रहता था उसने नज़र मानी कि मैं सेहत याब हो गया तो ताज़िया रखूंगा अल्लाह ने उसको सेहत दी मगर वह समझा कि उस नज़र के सबब सेहत मिली और अब बराबर हर साल आशूरा की रात ताज़िया रखता है उसका ये अमल कैसा है?

उत्तरः उसका यह अमल शिर्किया है तौबा लाज़िम है मगर उसे मुश्रिक न कहें बल्कि समझाने की कोशिश करें इसलिए कि वह अपने को मुसलमान कहता है।

उत्तरः क्या मुहर्रम को सोग का महीना कहना जायज़ है?

उत्तरः मुहर्रम के महीने को मातम और सोग का महीना करार देना जायज़ नहीं बल्कि हराम है और मुहर्रम के महीने में शादी वगैरह को ना मुबारक और नाजायज़ समझना सख़्त गुनाह और अहले सुन्नत के अक़ीदे के खिलाफ़ है, इस्लाम ने जिन चीज़ों को हलाल और जायज़ क़रार दिया हो, उनके बारे में यह अक़ीदा क़ायम कर लेना कि यह नाजायज़ और हराम है अपने ईमान के लिए खतरे की बात है।

(मसायले शिर्क व बिदअत 187/14)

प्रश्नः क्या दस मुहर्रम को सबील लगाना और लगवाना या उसके लिए चन्दा देना सही है?

उत्तरः मुहर्रम के खास दिनों में सबील लगाना और लगवाना शरबत या पानी पिलाना, या सबील के लिए चन्दा देना यह सब सही नहीं है और राफजियों से मुशाबिहत की वजह से हराम हैं।

(मसायले शिर्क व बिदअत 187/14)

प्रश्नः आशूरा किसे कहते हैं?

उत्तरः मुहर्रम की दस तारीख को आशूरा कहते हैं।

प्रश्नः आशूरा का रोज़ा रखना कैसा है? और क्या दस मुहर्रम के साथ नवीं मुहर्रम या ग्यारहवीं मुहर्रम का रोज़ा रखना भी ज़रूरी है?

उत्तरः आशूरा का रोज़ा रखना अफज़ल तरीन इबादत है दस मुहर्रम के साथ नवीं मुहर्रम का रोज़ा भी रखना चाहिए, नवीं को न रख सके तो ग्यारहवीं का रख ले, आशूरा के साथ नवीं या ग्यारहवीं के रोज़े को मिला कर रखना सुन्नत है।

❖❖❖

हज़रत हुसैन रज़ि0

—हाफ़िज़ डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0

सहाबि—ए—रसूल हुसैन, नवास—ए—रसूल हुसैन
नबी के महबूब हुसैन, रब के मक़बूल हुसैन
न झुके ज़ालिम इब्ने ज़ियाद के आगे
हो गये शहीद शहीद मक़बूल हुसैन
बड़े शक़ी थे जिन्होंने शहीद किया उनको
दोज़ख़ी हैं जिन्होंने शहीद किया उनको
न सोचा हुसैन आल हैं किस की
कैसे हिम्मत की जिन्होंने शहीद किया उनको
हमज़ा और अब्बास, सफ़ीयह, अली, फ़ातिमा, हसन हुसैन
अज़वाजे नबी, औलादे नबी, हम सबसे अक़ीदत रखते हैं

गाँधी जी का सपना

इं0 जावेद इक़बाल

15 अगस्त 1947 का दिन भारत के वर्तमान इतिहास का एक महत्वपूर्ण दिन है । इस दिन हम भारत वासियों ने अंग्रेजी राज से स्वतंत्रता प्राप्त की थी। वह स्वतंत्रता जिसे हासिल करने की कोशिशें अंग्रेज़ी राज क़ायम होने के साथ साथ ही भारत के मुस्लिम शासकों द्वारा प्रारंभ कर दी गई थीं। मैसूर का टीपू सुल्तान वह जांबाज बहादुर योद्धा था जिस की बहादुरी के अंग्रेज भी क़ायल थे। टीपू को शहीद करने के बाद अंग्रेजों ने सुकून की सांस ली। अगर टीपू सुल्तान चाहता तो वह भी हैदराबाद के निजाम और मराठा राजाओं की भांति अंग्रेजों से हाथ मिला कर अपनी सल्तनत को क़ायम रख सकता था, मगर उसे अंग्रेजों की गुलामी पल भर के लिए भी गवारा न थी। टीपू सुल्तान कहा करता था कि शेर की एक दिन की जिन्दगी गीदड़ की सौ साल की जिंदगी से बेहतर है, आख़िर 1799 में जंग के दौरान अंग्रेज़ों से लड़ते हुए वह शहीद हो गया।

इसके बाद सन् 1857 में एक बार फिर बहादुर शाह जफर के नेतृत्व में अंग्रेजों को भारत से निकालने की कोशिश हुई मगर यह भी नाकाम रही। तत्पश्चात बीसवीं सदी के आरम्भ में आजादी हासिल करने की एक और कोशिश शुरू हुई जिस का नेतृत्व महात्मा गांधी के हाथों में आया । गांधी जी का नाम मोहन दास करम चंद्र गांधी था, वह साउथ अफ्रीका में वकालत करते थे। जब वह अपने देश को अंग्रेजों के चंगुल से आजाद कराने के उद्देश्य से भारत आए तो अनेक मुस्लिम, गैर मुस्लिम नेताओं ने उनका स्वागत बम्बई के तट पर किया उस समय मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने गांधी जी को महात्मा की उपाधि से सम्बोधित किया। तो इस तरह गांधी जी महात्मा बने और फिर आजादी की लड़ाई का नेतृत्व उनके हाथ में आया। यह लड़ाई पूर्णतः अहिंसा के दायरे में रहते हुए लड़ी गई जिसके फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ।

आजादी की इस जंग में मौलाना मुहम्मद अली जौहर और उनके बड़े भाई मौलाना शौकत अली जौहर का श्रेष्ठ स्थान है। सन् 1921 में जब गांधी जी पूरे देश का दौरा कर रहे थे तब ये दोनों भाई गांधी जी के दायें बायें प्रशंसक और सहायक के रूप में साथ साथ चलते थे। दोनों भाई अली ब्रादरान के नाम से मशहूर थे।

मौलाना मुहम्मद अली रामपुर रियासत के एक धनवान परिवार से ताल्लुक रखते थे, उनका जन्म दिसंबर 1878 को हुआ था। आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से ग्रेजुऐशन के बाद भारत लौटे तो रामपुर रियासत में शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारी नियुक्त हुए। 1911 मैं अंग्रेज़ी भाषा में कामरेड नाम का अख़बार निकाला। यह अख़बार देश प्रेम, भाई चारा और निष्पक्षता के लिए शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। सन् 1923 में कांग्रेस की अध्यक्षता के लिए चुना गया। तत्पश्चात 1930–31 में लंदन की गोल मेज कान्फ्रेंस में भाग लिया। इस कान्फ्रेंस में आपने बड़ी भावनात्मक तकरीर की और यहाँ तक कह दिया कि या तो भारत को आजादी दो या फिर अपने देश में मुझे दोग गज़

ज़मीन दो, क्यूंकि मैं अब गुलाम देश में वापस नहीं जाऊंगा। और फिर अल्ल्लाह तआला ने उन के शब्दों की लाज रख ली, 4 जनवरी 1931को कान्फ्रेंस से लौटने से पहले ही मौलाना मुहम्मद अली जौहर का इंतकाल हो गया और उनकी लाश फलस्तीन के मुफ़्ती–ए–आज़म सय्यद अमीनुल हुसैनी की दरख्वास्त पर फ़लस्तीन ले जाई गई और बैतुल मक्दिस में उनकी तदफ़ीन की गई।

15 अगस्त से कुछ दिन पहले से ही देश के विभिन्न भागों में आजादी की ख़ुशी में समारोह आयोजित किए जाने लगे थे, मगर गांधी जी ने किसी भी समारोह में भाग नहीं लिया था। स्वतंत्र भारत के बारे में गांधी जी का अपना अलग ही नजरिया था। 11 अगस्त की शाम को उन्होंने अपनी प्रार्थना सभा में उपस्थित लोगों से कहा था कि हम सब को मिलने वाली आज़ादी के क़ाबिल बनना चाहिए, हमें ईश्वर का शुक्र अदा करना चाहिए उसने गरीबी में साधन विहीन होते हुए भी हमारी क़ुर्बानियों का फल आजादी के रूप में हमें दिया। यह कितनी शानदार बात होगी कि हम चालीस करोड़ लोग मिल कर एक दिन का उपवास रखें और अनाज बचायें। अतः 15 अगस्त को अनेक लोगों ने उपवास रखा।

गांधी जी के जीवन में यह दिन भी आम दिनों जैसा ही था उस दिन वह अन्य दिनों की अपेक्षा शीघ्र ही प्रातः 2 बजे उठ गये। रमजान के दिन थे, प्रातः ही लोग मिलने आने लगे। गाँधी जी उनसे मिलने बाहर गए और फिर गीता पाठ करने बैठ गए। उसके बाद वह सदा की तरह टहलने के लिए निकले। सड़कों पर उनके दर्शन के लिए लोगों की भीड़ खड़ी थी, उनमें हिन्दू मुसलमान सभी थे। हाथों में तिरंगे लिए, हिंदू मुस्लिम एकता जिन्दाबाद के नारे लगा रहे थे । गांधी जी का उस दिन यही उपदेश था कि हमें स्वराज्य की ख़ुशी में रोशनी आदि के द्वारा समारोहों का आयोजन करने की ज़रूरत नहीं है। हमारे पास देश की जनता के लिए प्रर्याप्त अनाज, कपड़ा, घी तेल तक नहीं है, हम भला कैसे उत्सव मना सकते हैं? प्रश्न हुआ कि फिर हम ख़ुशी कैसे मनाएं? गाँधी जी का जवाब था, हम सब मिल कर उपवास रखें, चरखा चलायें और ईश्वर से प्रार्थना करें। आज हमें सोचना चाहिए कि हमारी जिम्मेदारी कितनी बढ़ गई है। यह चरखा ही है जिसने हमें आज़ादी दिलाई, हम इसे कैसे भूल सकते हैं और जब हम उपवास करते हैं तो अपने शरीर को शुद्ध करते हैं इस तरह शुद्ध हो कर हमें ईश्वर से प्रार्थना करना चाहिए कि वह हमें आज़ादी का सदुपयोग करने के क़ाबिल बनाये ।

बाद में जब कुछ मंत्री गण उनसे मिलने आए तो गांधी जी ने उनसे स्पष्ट शब्दों में कहा कि आज आपने अपने सिरों पर काँटों का ताज पहना है, सत्ता की गद्दी बहुत बुरी चीज़ है आपको इस गद्दी पर सदा चौकस रहना है। आपको ज़्यादा सत्यवादी, ज़्यादा अहिंसक, ज़्यादा विनम्र, ज़्यादा सहनशील बनना है। ब्रिटिश राज में तो आपकी परीक्षा ली गई थी, मगर वह कोई परीक्षा नहीं थी, वास्तविक परीक्षा तो अब शुरू हो रही है, इस परीक्षा का कोई अंत होने वाला नहीं है। धन दौलत के लालच में कभी न फंसना। आप लोग गांव गरीब की सेवा के लिए गद्दी पर बैठे हो, ईश्वर आपकी मदद करे ।

यह थे गाँधी जी के विचार, उनकी अभिलाषा, मगर आज़ादी के बाद उनके विचारों से सहमति न रखने वाले नफ़रत के सौदागरों ने शीघ्र ही उनकी हत्या कर दी तथा सभ्य और स्वस्थ समाज के निर्माण की ओर ध्यान नहीं दिया गया। यदि राष्ट्र रूपी नौका के नाविकों को सच्चा देश प्रेम होता और वे घृणा एवं साम्प्रदायिकता से मुक्त होते तो आज देश की यह हालत न होती जो हम देख रहे हैं ।

❖❖❖

हमारा देश

मुबीन फ़तेहपुरी

भारत के हम वासी हैं और भारत हमको प्यारा है।
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है।।
गंगा जमुना की तहज़ीबों का ये इक गहवारा है।
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है।।
देश के हम मतवाले हैं और देश हमारा अपना है।
यहीं पे हमको जीना है और यहीं पे हमको मरना है।।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई, सबका यही तराना है।
मत बाँटो तुम हम सबको, ये सदयों प्रेम पुराना है।।
दूर रहो उन गद्दारों से जो नफ़रत को फैलाते हैं।
देश भक्ति का नारा दे कर देश में आग लगाते हैं।।
अंग्रेज़ों की नीति को ले कर उनकी राह पे चलते हैं।
हिन्दू मुस्लिम को लड़वा कर अपने पेट को भरते हैं।।
देश की नेता नगरी में ये खेल बहुत पुराना है।
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है।।
यही रही गर देश की हालत, देश का अपना क्या होगा।
ख़ून की नदियाँ बह जाएंगी, अम्न का बस सपना होगा।।
रहें अगर हम सब मिल जुल कर देश बड़ी ताक़त होगा।
दुनिया पर हम राज करेंगे, हमें न कोई डर होगा।।
भारत के हम वासी हैं और भारत हमको प्यारा है।
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है।।
जलयां वाले बाग़ में देखो, हम सब की इक टोली थी।
इंकलाब का नारा अपना, इंकलाब की बोली थी।।
याद करो हम सबने उस दिन खून की होली खेली थी।
हम लोगों का सीना था और अंग्रेज़ों की गोली थी।।
एक साथ हम रहे हमेशा फिर क्यों नियारा नियारा है।
नफ़रत की मत चिता जलाओ, हिन्दुस्तान हमारा है।।
यही मुबीन की विनती है, अब देश को मत बरबाद करो।
प्यार की बोली हरदम बोलो, दिलों को बस आबाद करो।।
नेताओं के चक्कर में मत लोगों का अपमान करो।
डरो ज़रा ईश्वर से अपने, मत देश को अब बदनाम करो।
वही है ईश्वर वही ख़ुदा है, वही है दाता हम सबका।।
उसी को पूजो उसी को मानो, उसी का बस सम्मान करो।
भारत के हम वासी हैं और भारत हमको प्यारा है।
प्यारे बच्चो ज़ोर से बोलो, भारत वर्ष हमारा है।।

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

नसब (कुण्डली) की हिफ़ाज़त में इस्लामी दृष्टिकोण :–

क्योंकि इस्लामी दृष्टिकोण से नसब की हिफ़ाज़त बहुत ज़रूरी और उसकी अहमियत बहुत ज़ियादा है। इसलिए ऐसी कोई सूरत जिससे नसब में जरा सा भी संदेह पैदा हो गवारा नहीं की गई। और तलाक़ या किसी दूसरी वजह मसलन पति की मौत से वैवाहिक सम्बन्ध पूरे तौर पर ख़त्म हो जाने के बाद भी किसी दूसरे व्यक्ति से उस औरत का उस वक़्त तक निकाह नहीं हो सकता जब तक पूरी तरह ये इत्मीनान न हो जाए कि उसे अपने पूर्व पति से गर्भ नहीं है। इसी इत्मीनान के लिए इद्दत और गर्भाशय की सफाई को ज़रूरी करार दिया गया। और इस पूरी अवधि में दूसरे से निकाह करना हराम बताया गया, क्योंकि इस हालत में दूसरा निकाह करने की इज़ाज़त देने से नसब संदिग्ध हो जाने की संभावना थी।

इस्लामिक शिक्षाओं की रौशनी में नसबी सम्बन्ध और उसकी हिफाजत न सिर्फ दुनियावी हुक्मों व फायदों के ऐतबार से ज़रूरी है बल्कि आख़िरत में भी उसके प्रभाव पड़ने और इस ताल्लुक के बाकी रहने का सही हदीसों से पता चलता है मसलन हदीस में आता है रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया कयामत के दिन तुम्हारे नाम तुम्हारे बाप के नाम के साथ मिला कर पुकारे जाएंगे। लेहाजा तुम अपने अच्छे नाम रखा करो।

नसब के बारे में शरीयत के हुक्मः–

ऐसे शरई हुक्मों को गिनना ही मुश्किल है जिन का नसब से गहरा संबंध है, उनमें विरासत, निकाह की हुरमत, नफ्के का वाजिब होना और सिला रहमी वगैरह शामिल हैं, शायद इन्हीं वजहों से कुछ नसब की हिफाजत के साथ उसके सीखने, यानी रिश्तेदारियों और ऊपर की पुश्तों के बारे में तफ्सीली मालूमात हासिल कर के उसे याद रखने का हुक्म दिया गया है।

तीसरी सदी हिजरी के मशहूर मुहद्दिस इमाम अबू ईसा तिर्मिजी (रह०) ने अपनी किताब ''जामे'' में नसब की तालीम की अहमियत की बिना पर मुस्तकिल बाब (अध्याय) का उन्वान (शीर्षक) ही ये कायम फरमाया है :–

باب ما جاء في تعلم النسب इस के तहत यह हदीस जिक्र फरमाई है :–

अनुवादः ''अपना अपना नसब सीखो ताकि रिश्तेदारों के साथ बेहतर सुलूक कर सको क्योंकि बेहतर सुलूक, संबंधियों में मुहब्बत पैदा करने, दौलत बढ़ाने और उम्र में बरकत नसीब करने का सबब बनता है।

(तिर्मिजी 19/2)

इतिहास से पता चलता है कि बहुत से मशहूर व बड़े सहाबा जैसे हजरत अबू बक्र (रजि०) हजरत आयशा (रजि०), हजरत जुबैर बिन मुतइम (रजि०) यह सब के सब नसब के माहिर थे, और आमतौर पर अरब वाले इन हजरात से नसब का इल्म हासिल करते थे। (अल–इसाबह 461/5)

अल–इस्तीआब'' जिक्र जुबैर बिन मुतइम 232/1 ऊपर की लाईनों के अध्यन के बाद ये अंदाजा लगाना मुश्किल न रहा होगा कि जब इस्लाम ने नसब को गडमड होने से बचाने और

उसमें शक पैदा होने से रोकने का इंतजाम किया और उस पर इतना जोर दिया है तो इस्लामी दृष्टिकोण से ये बात किस हद तक ना पसंदीदा और निंदनीय होगी कि किसी (निश्चित रूप से) नसब साबित शुदा बच्चे को ''मुंहबोला बेटा'' बना कर कानूनी ताकत या रिवाजी तरीके से उसे अपनी तरफ जोड़ लिया जाए, और असली बाप से उसका ताअल्लुक खत्म समझ लिया जाए।

इस बात की अहमियत का अंदाजा करने के लिए ये काफी है कि इस रिवाज या जोड़ने के अप्राकृतिक तरीके से सीधे तौर पर कुरआन में भी रोका गया है,जबकि कुरआन आमतौर पर सैद्धांतिक रहनुमाई करता है और तफ़्सीली बातों और छोटे छोटे हुक्मों को ज़्यादा नहीं छेड़ता है।

लेकिन इसके बावजूद कहा गया :–

अनुवादः ''किसी भी शख़्स को उसके सही नसब के सिवा और किसी से न जोड़ो और लोगों को उनके असली बाप से जोड़ा करो, यही इंसाफ की बात है, अगर इनके बाप की सही जानकारी न हो तो वो तुम्हारे दीनी भाई और दोस्त हैं।''

(अल–अहजाब, आयत–5)

मतलब ये है कि किसी भी सूरत में असली बाप के अलावा जुबानी तौर पर भी किसी दूसरे से न जोड़ो, अगर किसी वजह से नसब का पता न चलता हो तब भी असली बाप के अलावा किसी तरफ न जोड़ो, बल्कि ऐसे लोगों को दीनी भाई या दोस्त कह कर पुकार लिया करो, हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसे शख़्स का जन्नत में दाखिल होना हराम बताया है जो जान बूझ कर अपने को असली बाप के अलावा किसी दूसरे से जोड़ता हो।

जो शख़्स जानते हुए भी अपने बाप के अलावा किसी गैर को अपना बाप जाहिर करे, उस पर जन्नत हराम है।

(सहीह मुस्लिम– 57/1)

एक बड़े मशहूर आलिम का बेहतरीन विश्लेषणः–

आखिर में एक लम्बा बयान, उम्मत के बहुत ही मशहूर और महान ज़बरदस्त अध्ययन करने वाले आलिम, हाफिज शमसुद्दीन इब्ने कय्यिम अल– जौजी (इंतेकाल 751 हि०) का पेश किया जा रहा है, जिससे इस मसले पर अच्छी रौशनी पड़ती है, और शरीयत के हकीमाना कानून की कुछ मस्लेहतें सामने आ जाती हैं, फरमाते हैं :–

अल्लाह ताला ने मर्द के लिए चार बीवियों से निकाह जायज रखा, औरत के लिए चार मर्दों से नहीं, इसमें परवरदिगार की बहुत सी हिकमतें हैं, अगर औरत को दो या इससे ज़्यादा शौहरों के पास एक ही वक़्त में रहने की इजाजत दे दी जाती तो दुनिया में बहुत बड़ा फसाद बरपा होता और ''नसब'' तो बर्बाद हो कर रह जाते बल्कि दोनों शौहर आपस में लड़ते यहां तक कि कत्ल व गारतगरी की नौबत आती और ऐसी औरत कि जिसके कई बराबर के शरीक हकदार हों कैसे सुख से रह सकती, और वो शरीक लोग भी कब चैन से ज़िन्दगी गुज़ार सकते, अगर ये कि मर्द की चाहतों का तो सम्मान किया गया कि उसे एक से ज़ियादा औरतों से आनंद लेने की इजाजत दे दी गई, मगर औरत को नहीं दी गई, जबकि दोनों में इच्छा और भावना एक समान ही होती है, तो इसका जवाब ये है कि औरत का मिजाज मर्द के मुकाबले में ठंडा होता है, इसलिए उसकी जाहिरी और अंदरूनी हरकतें भी मर्द के मुकाबले में कम होती हैं इसके उल्टा मर्द में ताक़त और हरारत दोनों ज़ियादा होती हैं,

इसलिए उसको चंद औरतें रखने की इजाजत दी गई, और इसी ताक़त व सलाहियत की बिना पर मर्दों को औरतों का निगराँ और ख़र्चा उठाने वाला भी बनाया गया, चुनाँचे वो अपनी बीवियों की ज़रूरतें पूरा करने के लिए कभी कभी खतरे मोल लेता और बड़ी बड़ी कठिनाइयां बर्दाश्त करता है, इसलिए हलीम व शकूर खुदा ने उसको ये रिआयत दी, ताकि उसकी मेहनत व मशक़्क़त का बदला कुछ तो ज़ियादा मिले, रहा किसी का ये कहना कि औरत में मर्द के मुकाबले में ज़ियादा यौनेच्छा होती है, हकीकत के खिलाफ है भला मर्द व औरत का क्या मुकाबला! हाँ कभी ऐसा होता है कि औरत खाली होने और नफ़्का (खर्चा) की जिम्मेदारी न होने की वजह से और कुछ दूसरी कमजोरियों की वजह से जज़्बात का शिकार हो जाती हैं और अपने नफ़्स पर काबू नहीं रख पातीं इसलिए ऊपरी नज़र रखने वाले गलतफहमी में मुब्तला हो जाते हैं।

(एलामुल मुवक्केयीन–104 व 105/2, मुद्रित दारुल जील, बेरूत) हैं।

.....जारी.....

क्रोध.....

नोटः गुस्सा न किया करो का अर्थ है गुस्से में आ कर ग़लत काम न किया करो। गुस्सा आने पर लोगों को मुआफ करने से स्पष्ट है कि गुस्सा करना हराम है और गुस्सा पी जाना उच्चकोटि का संयम है। अल्लाह तआला हम को उस गुस्से से सुरक्षित रखे जो अल्लाह को अप्रिय है। हमको गुस्सा आए तो केवल अल्लाह के लिए आए। क्रोध के विषय में उर्दू का यह शेर (पद्य) बड़े काम का है।

न हलवा बन कि चट कर जाएं भूखे।
न कड़वा बन की जो चखे सो थूके।।

❖❖❖

दुआ–ए–मग़फिरत की दरख्वास्त

★ भूतपूर्व नाजिम नदवतुल उलमा मौलाना डॉ0 सैय्यद अब्दुल अली हसनी रह0 के नवासे मौलाना डॉ0 सैय्यद अहमद हसनी नदवी का एक लम्बी बीमारी के बाद 1 जुलाई, 2022 को इन्तिक़ाल हो गया, ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़िऊन''।

मरहूम एक अच्छे डॉ0 होने के साथ साथ बड़े मिलनसार, बा अख़लाक़, और गरीबों का बड़ा ख्याल रखने वाले थे। समाजी और दीनी काम करने वाली बहुत सी दीनी संस्थाओं के अध्यक्ष भी थे।

जुमे की नमाज के बाद मरहूम के महबूब खालू हजरत मौलाना सैय्यद मु0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहम नाजिम नदवतुल उलमा, लखनऊ व सदर आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने नमाजे जनाज़ा पढ़ाई और तकिया कलाँ रायबरेली के कब्रिस्तान में तदफीन अमल में आई।

★ सच्चा राही में ''आपके प्रश्नों के उत्तर'' के कालम निगार मुफ़्ती मु0 जफर आलम नदवी की बड़ी बहन का 30 जून, 2022 की शाम को अचानक इन्तिक़ाल हो गया ''इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़िऊन''। मरहूमा नमाज़ रोजे की बड़ी पाबन्द, दीनदार नेक खातून थीं, मरहूमा ने अपने पीछे शौहर के अलावा चार बेटे और चार बेटियाँ छोड़ी।

अल्लाह इन मरहूमीन की मगफिरत फरमाये, दरजात बलंद फरमाये और जन्नतुल फिरदौस में आला मकाम अता फरमाये। आमीन!

अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 से महब्बत

—मौलाना हक़ीम अब्दुल हई हसनी रह0 (हिन्दी अनुवादः आफ़ताब आलम नदवी ख़ैराबादी)

अल्लाह तआ़ला का इरशाद है ''आप कह दीजिए कि अगर तुम्हारे बाप और तुम्हारे लड़के और तुम्हारे भाई और तुम्हारी बीवियाँ और तुम्हारे कुम्बे और वह माल जो तुमने कमाये हैं और वह तिजारत जिसके बिगड़ जाने से तुम डर रहे हो और वह घर जिन्हें तुम पसन्द करते हो ये सब तुमको अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से और उसकी राह में जिहाद करने से ज़ियादा अज़ीज़ हों तो तुम मुन्तज़िर रहो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म भेज दे''।

(सूरः तौबा—24)

अल्लाह तआला का इरशाद है ''ऐ ईमान वालो, तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाये तो अल्लाह तआ़ला जल्द ही ऐसे लोगों को वुजूद में ले आयेगा जिनको वह चाहता होगा और वह उसे चाहते होंगे''।

(सूरे अलमाइदा आयत—54)

और इरशादे रब्बानी है और जो ईमान वाले हैं वह तो अल्लाह की महब्बत सबसे कवी रखते हैं''।

हलावते ईमानी के लिए तीन चीज़े ज़रूरी हैंः—

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फरमाया जिस शख़्स के अन्दर तीन बातें हों उसको ईमान की हलावत चाश्नी व लज़्ज़त मिलेगी।

1.अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 सारी चीज़ों से ज़ियादा महबूब हों।

2. वह किसी से महब्बत करे तो अल्लाह के लिए करे।

3. वह कुफ़्र की तरफ़ दोबारा लौटना उतना ही नापसन्द करे जितना आग में डाले जाने को नापसन्द करता है।

(बुख़ारी मुस्लिम)

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत सब पर ग़ालिब होनी चाहिएः—

हज़रत अनस रज़ि0 ही की एक रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फरमाया कि तुममें से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक की मेरी महब्बत अहलो अ़याल, माल व दौलत और तमाम लोगों की महब्बत पर ग़ालिब और ज़ियादा न हो जाये। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 से एक और रिवायत मरवी है कि हुजूर सल्ल0 ने इरशाद फरमायाः तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता है जब कि मैं उसके वालिद, औलाद और तमाम लोगों से ज़ियादा उसको महबूब न हो जाऊँ। (बुख़ारी)

जो जिससे महब्बत करेगा उसका हश्र उसी के साथ होगाः—

हज़रत अनस रज़ि0 से एक और रिवायत है कि एक ऐराबी (देहाती) ने हुजूर सल्ल0 से पूछा क़यामत कब आयेगी? आप सल्ल0 ने फरमाया तुमने उसके लिए क्या तैयारी की है? उसने जवाब दिया, अल्लाह और रसूल की महब्बत, हुजूर सल्ल0 ने फ़रमाया तुम जिससे महब्बत करते हो उसी के साथ होगे, इस पर हज़रत अनस रज़ि0 फरमाते हैं कि मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 से महब्बत

शेष पृष्ठ..39...पर

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़ैरों की नज़र में

इंग्लैंड के विश्वविख्यात दार्शनिक और विद्वान वर्नार्डशा ने जनवरी 1933 ई0 में भारत आगमन के अवसर पर ''लाइट'' लाहौर के प्रतिनिधि से पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये थे, वे वर्नार्ड के शब्दों में ये हैं:–

मैंने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जीवनी का अध्ययन किया है, वह एक महामहिम मानव थे। मेरी राय में उन्हें मानवता मुक्ति दाता कहना चाहिए। मुझे विश्वास है कि अगर उनके जैसा इन्सान वर्तमान संसार का अधिनायक बन जाता, तो उसकी सारी जटिल समस्याओं का इस प्रकार समाधान कर देता कि इन्सानी दुनिया इच्छित सुख–शांति की दौलत से मालामाल हो जाती''।

(हिन्दी साप्ताहिक पत्रिका ''कान्ति'' से ग्रहीत)

❖❖❖

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हों, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

स्वतंत्रता संग्राम और मुसलमान

इदारा

हमेशा से हिन्दुस्तान एक ख़ुशहाल और विशाल देश रहा है, प्राकृतिक साधनों और खनिज पदार्थों से यह देश मालामाल है, यूरोप महाद्वीप की बहुत सी कौमों ने हिन्दुस्तान की ओर रुख़ किया, उन आने वालों में, पुर्तगाली डच, फ्रांसीसी और अंग्रेज़ थे, आम तौर पर हिन्दुस्तान में उनका प्रवेश व्यापार के सम्बन्ध से हुआ, परन्तु यहाँ की अन्दरूनी कमज़ोरी से फ़ाइदा उठाते हुए अपने पैर जमाते रहे उनमें पारसपरिक जंगें हुईं, यहां तक कि इंगलैण्ड के अंग्रेज़ प्रभुत्वशाली हो गये और देश के बड़े भूभाग के मालिक बन गये। देश को अंग्रेज़ों के चंगुल से निकालने में देशवासियों को लम्बा संघर्ष करना पड़ा और हज़ारों लाखों इन्सानों को अपनी जानों का नजराना पेश करना पड़ा और फाँसी के फंदे को चूमना पड़ा, निःसंदेह यह स्वतंत्रता संग्राम था जिस के जीतने में हिन्दू और मुसलमान दोनों का कठोर परिश्रम और प्रयास शामिल है, परन्तु इस संग्राम की अगुवाई और नेतृत्व मुसलमानों के हाथ में थी वही उसके पथप्रदर्शक थे इतिहास इसका साक्षी है, अंग्रेज़ों के खतरे को सबसे पहले जिस व्यक्ति ने भाँपा और महसूस किया वह मैसूर स्टेट का वीर और साहसी शासक फ़तह अली खाँ सुलतान था जिसने पूरी तैयारी के साथ जम कर अंग्रेज़ों का मुक़ाबला किया उसने पड़ोसी राज्यों से पत्र व्यवहार किया और उनको संयुक्त मोर्चा बनाने की दावत दी परन्तु अंग्रेज़ों ने दक्षणी भारत के राजाओं को अपने साथ मिला लिया जिसके परिणाम स्वरूप वीर मुजाहिद टीपू सुलतान की 1799 ई0 में सरंगा पट्टम में शहादत हो गई उसने अंग्रेज़ों की ग़ुलामी के मुक़ाबले में मौत को प्रधानता दी, उसका ऐतिहासिक कथन आज तक लोगों की ज़बान पर है ''गीदड़ की सौ साला ज़िन्दगी से शेर की एक दिन की ज़िन्दगी बेहतर है'' अंग्रेज़ उसकी ताक़त और दूरदर्शिता से बहुत प्रभावित थे, और समझते थे कि जब तक सुलतान टीपू है भारत पर क़बज़ा करना आसान नहीं, अंग्रेज़ जनरल ''हार्स'' को जब टीपू सुलतान की शहादत की ख़बर मिली तो उसने उनकी लाश के पास खड़े हो कर ये शब्द कहे किः

''आज से हिन्दुस्तान हमारा है''

राष्ट्रपिता मोहन दास करमचन्द्र गाँधी ने *Young India* के एक आर्टिकल में टीपू सुलतान की देश भक्ति और रवादारी को खुल कर स्वीकार किया था है कि वतन और कौम के शहीदों में उनसे बलन्द मरतबा कोई न था, देश की जंगे आज़ादी में मुस्लिम उलमा की बहुत बड़ी संख्या है जिन्होंने अपना मज़हबी फ़रीज़ा समझ कर जान माल की कुर्बानी दी, उलमा की सूची में एक बहुत प्रसिद्ध नाम है मौलाना अहमदुल्लाह शाह फैज़ाबादी का जिन्होंने अपनी फ़ौजी सलाहियतों, साहस और बहादुरी का सिक्का दोस्त व दुशमन दोनों के दिलों पर बिठा दिया था, अपनी कूट नीति द्वारा अंग्रेज़ों को भारी क्षति पहुंचाई

इसीलिए अंग्रेज़ों ने मौलाना के सर पर पचास हज़ार रूपये का इनआ़म रखा जिसको प्राप्त करने के लिए एक देशी राजा ने धोखे से बुला कर मौलाना का सर क़लम कर दिया और देश के साथ गद्दारी का सुबूत फ़राहम कर दिया।

अंग्रेज़ लेखक ''होम्ज़े'' लिखता है ''मोलवी अहमदुल्लाह शाह उत्तरी भारत में अंग्रेज़ों का सबसे बड़ा दुशमन था'' पन्डित सुन्दर लाल लिखते हैं ''इसमें सन्देह नहीं कि दुनिया की आज़ादी के शहीदों में 1857 ई0 के मोलवी अहमदुल्लाह शाह का नाम हमेशा के लिए सम्माननीय रहेगा''।

(सन सत्तावन पेज–208)

दूसरा अंग्रेज़ लेखक ''वालेसन'' लिखता हैः–''मौलवी (अहमदुल्लाह) एक बड़ा ही आश्चर्यजनक इन्सान था, ग़दर के दिनों में सेनापति की हैसियत से उसकी योग्यता के बहुत से सुबूत मिले, कोई भी दूसरा आदमी गर्व के साथ नहीं कह सकता था कि मैंने दो बार सरकालन कैम्प बिल को मैदान में पराजित किया''।

वह यह भी लिखता है ''अहमदुल्लाह सच्चा देश प्रेमी था, उसने किसी निहत्थे का ख़ून बहा कर अपनी तलवार को नापाक नहीं किया, बहादुरी के साथ डट कर खुले मैदान में उन विदेशियों के साथ जंग की जिन्होंने उसके वतन को छीन लिया था, हर देश के वीर और सच्चे लोगों को चाहिए कि मोलवी अहमदुल्लह शाह को सम्मान के साथ याद रखें''।

History of India Mutiny Vol-IV Page-379-381)

अंग्रेज़ों के छल कपट और कूटनीति की वजह से जब स्वतंत्रता संग्राम की कोशिशें नाकाम हो गईं तो अंग्रेज़ों ने भारत वासियों से बदला लेना शुरु किया और उनके साथ ऐसा अत्याचार और बर्बरता का व्यवहार किया जिसने चंगेज़ और हलाकू की याद ताज़ा कर दी, बहादुर शाह ज़फ़र के तीन बेटों को ऐसी क्रूरता के साथ क़त्ल किया कि लोगों के शरीर पर झुरझुरी तारी हो गई, इसके साथ शाही ख़ानदान के 33 लोगों का क़त्ल किया गया जिसमें मरीज़, बूढ़े और अपाहिज भी शामिल थे, उन्होंने बादशाह का अपमान किया और बहुत ही अपमान जनक ढंग से उन पर मुकदमा चलाया वह चाहते थे कि उनको भी क़त्ल कर दें, लेकिन चूंकि एक फ़ौजी अफ़सर ने उनकी ज़िन्दगी की ज़मानत ली थी, इसके लिए उनको ज़िन्दगी भर के लिए ''रंगून'' जिलावतन कर दिया गया जहां बेकसी, तंगी व परेशानी की हालत में उनका इन्तिक़ाल हो गया।

लाल क़िले पर कब्ज़े के बाद अंग्रेज़ी फ़ौजों ने देहली शहर में क़त्ल ग़ारत गरी, लूट मार का बाज़ार गर्म कर दिया, सर तन से जुदा होते रहे, ख़ून बहता रहा, मुजरिम और बेगुनाह का फ़र्क किये बिना गोलियाँ चल रही थीं, दिल्ली जो हिन्दुस्तान का दारुस्सलतनत था, और है बिलकुल वीरान हो गया, वहां गिरे हुए मकानात के मलबों, सड़ी हुई लाशों और फटे हुए जिस्मों के सिवा कुछ नज़र न आता था। अंग्रेज़ अपने रोब और दबदबे को क़ायम करने के लिए सड़क कनारे फ़ांसियाँ दे रहे थे, सबसे बड़ी भयावह सज़ा तोप के दहाने में बाँध कर दाग दिये जाने की थी, यह सज़ा समाज के पढ़े लिखे सम्मानीय लोगों खास कर उलमा को दी गईं इन सजाओं को देखने के लिए बड़ी संख्या में अंग्रेज़ मर्द और औरतें खड़े होते थे और देख कर हंसते और मुस्कराते थे।

कुछ उलमा जिनको जंगे

आज़ादी के सिलसिले में उम्र क़ैद और काले पानी की सज़ा दी गई उनके नाम निम्नलिखित हैं:–

मौलाना फ़ज़ले हक़ खैराबादी, मुफ़्ती इनायत अहमद काकोरवी, मुफ़्ती मज़हर करीम दरयाबादी के नाम विशेष हैं, मौलाना फ़ज़ले हक़ ख़ैराबादी तो वहीं अण्डमान में इन्तिक़ाल कर गये, बाक़ी दो आलिम बहुत दिनों के बाद वापस आये। स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास जब भी लिखा जाएगा। दो बड़े और बुज़ुर्ग आलिमों का नाम भुलाया नहीं जा सकता, शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन देवबन्दी और उनके शागिर्दों में मौलाना हुसैन अहमद मदनी जिनको दुनिया "असीर–ए–माल्टा" के नाम से जानती है।

❖❖❖

अल्लाह और उसके .....

करता हूँ, अबू बक्र रज़ि0 और हज़रत उमर रज़ि0 से महब्बत करता हूँ, मुझे अल्लाह से उम्मीद है कि इन हज़रात के साथ हूँगा, चाहे उनके जैसे काम न कर सकूँ।

एक और रिवायत हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि0 से मरवी है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास एक शख्स हाज़िर हुआ उसने अर्ज किया कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ऐसे शख़्स के बारे में आप सल्ल0 क्या फ़रमाते हैं जिसने लोगों से महब्बत की, लेकिन उनके मरतबे का नहीं हुआ, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः मोमिन जिसको चाहता है उसी के साथ होगा।

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे .....

तो दूसरों का क्या कर सकूं, और न मैं ग़ैब को जानता हूं, अगर जानता होता तो पहले ही हर काम का अंजाम मालूम कर लेता, अच्छा होता तो करता और अगर बुरा मालूम होता तो हाथ रोक लेता, यह किसी के बस में नहीं, कि जिसका जो जी चाहे मालूम करे। वह जिसको चाहे हिदायत दे, जिसको चाहे हिदायत से महरूम रखे। यह सब अल्लाह तआला के काम हैं। एक आयत में अल्लाह तआ़ला ने खुद अपने पैगम्बर से फ़रमायाः "आप जिसको चाहें उसको हिदायत नहीं दे सकते हाँ अल्लाह जिसको चाहता है हिदायत देता है।"

(सूरः कसस–56)

अब कुछ सही हदीसें प्रस्तुत की जा रही हैं जिसमें साफ़ तौर पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि ग़ैब का इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है।

हज़रत रबी बिन्त सऊद बिन अफरा बयान करती हैं कि "अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मेरी शादी हुई थी, उस वक्त तशरीफ़ लाए थे और जिस तरह तुम बैठे हो उसी तरह आप सल्ल0 तशरीफ फरमा हुए थे, तो कुछ बच्चियाँ दफ बजा बजा कर उन लोगों का तज़किरा करने लगीं जो बद्र में शहीद हुए थे, तो उनमें से एक बच्ची बोली कि हम में एक ऐसे नबी हैं जो कल की बात जानते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह बात मत कहो, और जो तुम कह रही थी वह कहो।"

बुखारी की दूसरी रिवायत में है कि हज़रत आयशा रज़ि अल्लाह ताआला अन्हा फरमाती हैं "कि अगर तुम से कोई कहे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन पांच चीज़ों को जानते हैं जिसके बारे में अल्लाह तआ़ला फरमाता है (क़यामत का इल्म अल्लाह के पास है) तो उसने बहुत बड़ा बोहतान बांधा यानी बहुत बड़ा इल्जाम लगाया"।

❖❖❖

बादशाह की बहादुरी

अफ़ज़ल हुसैन

मुग़ल बादशाहों में औरंगज़ेब आलमगीर का नाम बहुत मशहूर है वह बहुत नेक और इबादत गुज़ार बादशाह था। हुकूमत का सारा काम बड़ी मेहनत और ईमानदारी से अन्जाम देता फिर भी शाही ख़ज़ाने से अपने निजी ख़र्च के लिए एक पैसा भी नहीं लेता। कुर्आन मजीद की किताबत करके उसके हद्‌ये से अपना पेट पालता। कभी कभी टोपियाँ बना कर बेचता और इसी आमदनी से गुज़र बसर करता।

एक दिन की बात है, औरंगज़ेब सुबह ही जंगल की तरफ़ निकल गया, इस समय वहां का मंज़र बड़ा सुहाना था। हर तरफ़ कुदरत की कारीगरी के जल्वे नज़र आ रहे थे। सुबह की ठण्डी हवा के झोकों से जंगल के हरे भरे पेड़ झूम रहे थे, ख़ुशरंग फूल आँखों को बहुत भले लग रहे थे। पेड़ों के पक्षी अपनी सुरीली आवाज़ में पालनहार की हम्द व सना के गीत अलाप रहे थे। औरंगज़ेब अलमगीर उस दृश्य से बहुत प्रभावित हुए। आसपास की सभी चीज़ों को अल्लाह की तस्वीह में लगा देख कर वो वहीं रुक गये और अल्लाह का शुक्र अदा करने के लिए नमाज़ अदा करने लगे।

वह नमाज़ पढ़ ही रहे थे कि वहाँ एक शेर आ निकला, बादशाह इबादत में लगा हुआ था उसे शेर के आने की बिल्कुल ख़बर न हुई। शेर ने पीछे से आकर आलमगीर की कमर पर पंजा मारा, बादशाह बिल्कुल नहीं घबराया, उसे ख़ुदा के अलावा किसी का डर नहीं था, हाथ में तलवार संभाली और इस दिलेरी से शेर पर वार किया कि शेर का पेट फट गया और वह वहीं गिर गया।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

आस्ट्रेलिया के कैबिनेट में पहली बार दो मुस्लिम बने मंत्रीः–

स्थानीय मीडिया ने बताया कि देश के इतिहास में पहली बार आस्ट्रेलिया की कैबिनेट में दो मुस्लिम सदस्य चुने गये हैं।

एसबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, संसद के दोनों मुस्लिम सदस्यों ऐसी एनी और एड हुसिक ने बुधवार को कैबिनेट में शपथ ली।

हुसिक उद्योग और विज्ञान मंत्री होंगे जबकि एली बच्चों की शिक्षा और युवाओं के लिए मंत्री के रूप में काम करेंगे।

हुसिक एक बोस्नियाई अप्रवासी का बेटा है, जबकि एली अपने माता–पिता के साथ मिस्र से आई थीं जब वह 2 साल की थी।

आस्ट्रेलियाई मुस्लिम एडवोकेसी नेटवर्क ने मुस्लिम सांसदों को अपने मंत्रिमंडल में शामिल करने के अल्बानी के ऐतिहासिक निर्णय का स्वागत किया।

एसबीएस ने आस्ट्रेलियाई मुस्लिम एडवोकेसी नेटवर्क की नेता रीता जाबरी मार्कवेल के हवाले से कहा, ''यह एक ऐसा दिन है जिसके बारे में हमने कभी नही सोचा था कि हम इसे देखेंगे।

''यह लोगों को राजनीति और लोकतंत्र के करीब लाएगा, इससे लोगों को लगेगा कि वे बातचीत का अधिक हिस्सा हैं''।

वियतनाम में बना काँच के फर्श वाला सबसे लंबा पुलः–

दुनिया के सबसे ऊँचे और अनोखे कांच के पुल का तमगा अब चीन से छिन गया है। दरअसल, अब वियतनाम में यह पुल बन कर तैयार हो गया है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस के लिए भी भेजा गया है। वियतनाम के इस अनोखे पुल को ''बाख लोंग'' नाम दिया गया है। इसका मतलब होता है सफेद ड्रेगन। यह पुल एक वर्षा वन के ऊपर से गुज़रता है, जो सोन ला प्रांत में है। यह मोक चाऊ द्वीप पर है।

पुल के फर्श को टेंपर्ड ग्लास से बनाया गया है जो एक बार में 450 लोगों का भार सहन कर सकता है। ब्रिज की लम्बाई 630 मीटर और ऊँचाई 150 मीटर है, ब्रिज को चलाने वाली कंपनी के प्रवक्ता होआंग मान डुई कहते हैं, लोग इस पुल पर खड़े हो कर नीचे कुदरती खूबसूरती को निहार पाएंगे।

डर–डर कर चलते लोगः–

खुलने के साथ ही देसी पर्यटकों को तो इस पुल ने खासा आकर्षित किया है। पुल पर डर–डर कर चलते लोगों के वीडियो खूब वायरल हो रहे हैं।

ब्रिटेन में नए वीजा से भारतीयों की ऐंट्री आसानः–

ब्रिटेन में सोमवार को 'हाई पोटेंशनल इंडिविजुअल' यानी एचपीआई वीजा व्यवस्था की शुरुआत हुई। इसमें भारतीयों सहित दुनिया भर के 50 टॉप विश्वविद्यालयों के स्टूडेंट्स को फायदा होगा। इन स्टूडेंट्स को एचपीआई वीजा के तहत कम से कम दो साल ब्रिटेन में रहने और काम करने की इजाज़त होगी। पीएचडी और अन्य रिसर्च स्कॉलर के लिए रुकने की यह अवधि 3 साल होगी। साथ ही, आवेदक के लिए ज़रूरी नहीं है कि उसके पास जॉब ऑफर हो। अगर किसी वजह से एचपीआई वीजा अवधि को बढ़ाना चाहते हैं तो अन्य वीजा का इस्तेमाल भी कर सकेंगे।

ब्रिटेन के टॉप विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे भारतीयों को भी इसका फायदा होगा। ब्रिटिश सरकार के भारतवंशी मंत्रियों ऋषि सुनक और प्रीति पटेल ने साझा बयान में कहा कि इस वीजा कैटिगरी का मकसद दुनियाभर के सर्वश्रेष्ठ और मेधावी प्रतिभाओं को आकर्षित करना है। हार्वर्ड, स्टैनफर्ड और एमआईटी जैसे टॉप शिक्षण संस्थानों से साइंस, इंजीनियरिंग और मेडिकल रिसर्च में ग्रेजुएट लोगों को ब्रिटेन आने के लिए प्रोत्साहित करना है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021   تاریخ ________

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्ड़िंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।
नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/– (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखेंः
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजेंः
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए न0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
–ःतअ़मीरः–
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/0795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 21 - Issue 06

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983